सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 15 • अंक : 12 • 5 मार्च 2019 • मूल्य : 20 रु.

श्री अवंति पार्श्वनाथ जैन तीर्थ, उज्जैन

प्रतिष्ठा-दीक्षा महोत्सव

नवदीक्षित मुनि मयूखप्रभसागरजी म.

नवदीक्षिता साध्वी आगमरुचिश्रीजी म.

अवन्ति तीर्थ के वाराणसी नगर में कल्याणक का दृश्य

हमारे संघ के परम उपकारी, जिनेश्वर युवा परिषद के प्रेरणास्रोत,
परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

अवन्ति पार्श्वनाथ

को
जन्म दिवस पर
हार्दिक अभिनंदन...
वर्धापना...

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ मारवाड़ी समाजी की युवा ऊर्जा
श्री जिनेश्वर युवा परिषद, उज्जैन
अशोक कोठारी, तरुण डागा, रितेश मेहता, दिलीप चौपड़ा
पंकज कोठारी, मनोज कोचर, आशीष सुरणा, हर्ष चौपड़ा
रवीन्द्र बांठिया, राजेश भण्डारी, निलेश मेहता, अमित बोथरा
मयूर संकलेचा, जिनेन्द्र चौपड़ा, अशोक छाजेड़, अभय छाजेड़
राजेश संकलेचा, डॉ. अपूर्व धारीवाल, राजेश खारीवाल
www.avantitirth.com avantitirth@gmail.com
Follous us on : avantitirth

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

को
जन्म दिवस पर
हार्दिक अभिनंदन...
वर्धापना...

पूज्या गच्छगणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से

Smt. Surajbai Milapchand Burad
Sripal Julesh Kotadia

Swathy Jwellery

99 Eda street, Pallakarai
Post. Tiruchy- 620001 (T.N.)

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

अप्पा कत्ता विकत्ता य दुक्खाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥

आत्मा स्वयं ही दुःख और सुख की कर्ता है और उन का क्षय करने वाली भी है।
इसलिए सन्मार्ग पर चलनेवाली आत्मा मित्र है और उन्मार्ग पर चलने वाली आत्मा शत्रु है।

The soul is the architect of one's happiness adn unhappiness. Therefore, the soul on the right path is one's own friend and a soul on the wrong path is one's enemy.

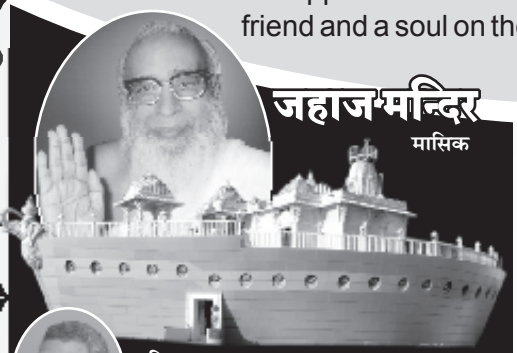

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 15 अंक : 12 5 मार्च 2019 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	06
2. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	07
3. जिन शासन की अमर पूंजीः चार दादा गुरुदेव		09
4. सपना हुआ साकार	मुनि मयूखप्रभसागरजी म.	12
5. खरतर पच्चीसी	वाचन रत्नसोमजी महाराज	13
6. अधूरा सपना	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	15
7. अवन्ति तीर्थ की प्रतिष्ठा : अविस्मरणीय अनुभव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	17
8. प्रेरक कथा	कैलाश बी. संखलेचा	19
9. गोत्र का इतिहास	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	30
10. समाचार दर्शन		31
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	44

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
को
जन्म दिवस पर
हार्दिक अभिनंदन... वर्धापना...
- जहाज मन्दिर परिवार

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें। मो. 094447 11097

नवप्रभात

अपनी निगाहें हमें अपने भविष्य पर टिकानी होती है। जीना वर्तमान में होता है, पर देखना भविष्य को होता है। चलना रास्ते पर होता है, पर नजरें मंजिल पर होती है।

रास्ता वर्तमान है... मंजिल भविष्य है।

रास्ता क्षण भर का साथी है... मंजिल सदा की साथी है।

दोनों का अपना-अपना महत्व है। पर चलना प्रारंभ करने से पहले हमें मंजिल का बोध पाना होता है... लक्ष्य का निर्णय करना होता है। फिर रास्ते का चुनाव मंजिल के अनुसार करना होता है।

रास्ता कहीं ओर जाता हो... और मंजिल किसी दूसरी दिशा में हो... तो परिणाम सिवाय भटकाव के और कुछ नहीं होता।

राही को सदा इस बात का ध्यान रखना होता है कि मेरा रास्ता मंजिल से विपरीत दिशा का न हो!

दो रास्ते हों! एक रास्ता उबड़-खाबड़ हो... दूसरा साफ सुथरा, सुगन्ध से भरपूर!

जो रास्ता उबड़-खाबड़ है, कठिन है, पथरीला है, वह मंजिल की ओर जाता है और जो रास्ता एक दम साफ सुथरा और अच्छा हो, वह किसी दूसरी दिशा में जाता हो! ऐसी स्थिति में क्या हम साफ सुथरे रास्ते का चुनाव करेंगे, जो किसी अन्य दिशा में हमें ले जाता हो... या हम उबड़-खाबड़ रास्ते का चुनाव करेंगे, जो हमें लक्ष्य से साक्षात्कार कराता हो!

यदि हमारा ध्यान रास्ते की विशिष्टता पर है तो हम मंजिल हार जायेंगे।

यदि हमारा ध्यान मंजिल की शीघ्र-प्राप्ति की ओर है तो उबड़-खाबड़ रास्ते पर चलकर भी हम प्रसन्नता का ही अनुभव करेंगे।

मंजिल के राही को रास्ते में आ रहे उन अवरोधकों से बहुत सावधान रहना होता है, जो उसे उसकी मंजिल से दूर ले जाते हों!

क्योंकि मुख्य मंजिल है, रास्ता नहीं।

क्योंकि रास्ता क्षणिक है, मंजिल स्थायी है।

अपनी निगाहों में भविष्य की मंजिल का रोडमेप बनाओ और उस दिशा में जाते रास्ते को परम प्रसन्नता के साथ शीघ्र स्वीकार करो। यह देखने मत बैठो कि रास्ता कौन-सा अच्छा है। रास्ते की अच्छाई महत्वपूर्ण नहीं है। रास्ते की सच्चाई महत्वपूर्ण है।

सोलह सतियाँ
कथानक
10

विलक्षण वैराग्यवती सती पद्मावती

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे)

राज-चयन की अपनी एक प्रक्रिया थी। एक अनुपम घोड़ी को सुन्दर वस्त्राभूषण से सुसज्जित किया गया। उसे नगर में छोड़ गया। वह जिसके पास जाकर रूक जाए, वह नगर का भावी सम्राट् और प्रजा का पालक होगा।

जिस दिन यह प्रक्रिया होनी थी, उसी दिन करकण्डू का पिता सपरिवार कंचनपुर पहुँचा था और नगर के बाहर वृक्ष के तले आराम कर रहा था। घोड़ी घूमती-घूमती नगर से बाहर की ओर बढ़ने लगी। लोगों की आशा निराशा में ढलने लगी। क्या हमारा रक्षक, त्राता और स्वामी कोई नहीं होगा! कितने-कितने प्रश्न मन को भयभीत और चिंतित करने लगे। इतने में वह घोड़ी करकण्डू की ओर बढ़ी तथा प्रदक्षिणा देकर वहीं ठहर गयी।

नभमण्डल जयनाद से गूंज उठा। मंत्रीवर आगे आए और करकण्डू का अभिनंदन करने लगे।

करकण्डू विस्मित था पर शीघ्र ही सारी बात समझ गया। उसने मन ही मन मुनिवर के प्रति अपनी भावभीनी कृतज्ञता व्यक्त की।

करकण्डू माता-पिता के साथ रथारूढ़ हुआ। उदास चेहरे खिल उठे। शहनाई वादन और ढोल-नगाड़ों से नगर का कोना-कोना नाच उठा। करकण्डू का ठाठ-बाट से राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ।

उसी दिन ब्राह्मण के कानों तक सन्देश पहुँचा कि करकण्डू कंचनपुर का अधिपति बन गया है। वह अविलम्ब कंचनपुर के राजदरबार में उपस्थित हुआ। ब्राह्मण को देखते ही करकण्डू को दत्त-वचन याद हो आया।

बधाई और अभिनंदन के पश्चात् ब्राह्मण ने तमन्ना को अभिव्यक्त करते हुए कहा-राजन्! आपको अपना वचन तो याद है ना?

करकण्डू ने कहा-बिल्कुल याद है। सज्जन जान दे देते हैं पर जुबान से चलायमान नहीं होते। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप कौनसी आकांक्षा लेकर आये हैं। तत्पश्चात् मंत्रीवर की ओर गर्दन घुमाकर बोले-मंत्रीश्वर! ब्राह्मण महोदय को मैंने राजा बनने से पहले वादा किया था कि जब मैं राजा बन जाऊंगा, तब एक गाँव तुम्हें उपहार में दूंगा। मैं उस वचन-ऋण से यथाशीघ्र मुक्त होना चाहता हूँ। आप शीघ्र ही विप्रप्रवर की मनोकामना को पूर्ण करे। तदुपरान्त ब्राह्मण-उन्मुख होते हुए कहा-आप राज्य की दक्षिण दिशा में गाँव चाहते हैं या उत्तर....

बीच में ही बात को काटता हुआ ब्राह्मण बोला-नरेन्द्र! आपकी वचन प्रतिबद्धता और पालन में तत्परता को देखकर मेरा हृदय आनंद की बूंदों से छलक रहा है। आपके उज्ज्वल व्यक्तित्व को लाखों अभिवंदनाएँ। तत्क्षण बात को नयी दिशा देता हुआ वह बोला-राजन् ! मेरा आपसे एक हार्दिक निवेदन है कि मेरा घर जिस गाँव में है, वो ही गाँव भेंट में देने की कृपा करे।

करकण्डु बोला-जैसी आपकी इच्छा। आप तो बस इतना बता दीजिये कि आपका गाँव किस दिशा में है, कहाँ और किस गाँव में आपका गृहस्थान है?

ब्राह्मण बोला-राजन् ! मेरा गाँव आपके अधिकार क्षेत्र के बाहर चंपापुरी की सीमाओं में है।

तो क्या हुआ?आज ही मैं चंपा नरेश को संदेश भिजवाता हूँ।

करकण्डू का संदेश दधिवाहन को जंचा नहीं। उन्होंने

तीखी व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया करते हुए अपना संदेश प्रेषित किया-करकण्डू ! तुम अभी राजनीति के नियमों से अनभिज्ञ हो। अपने अधिकारवर्ती क्षेत्र का परस्पर विनिमय करने का मंतव्य आपके अदूरदर्शी चिन्तन का परिणाम है। इस प्रकार का हास्यास्पद व्यवहार दो राजाओं में पहले न कभी हुआ है, न कभी हो सकता है। मैं ब्राह्मण को तुम्हारे कथन पर गाँव प्रदान करूं और उतना ही क्षेत्र तुम्हारे राज्य से मांगू, यह मांग अनुचित व अव्यवहारिक ही नहीं, राजकीय प्रशासन शैली के सर्वथा विरूद्ध भी है।

हाँ ! गाँव मिल सकता है पर तुम्हें याचक के रूप में मुझसे निवेदन करना होगा। यह भी यदि सम्भव नहीं है तो रणभूमि में बाजूओं का दम तोलना होगा। ग्राम-प्राप्ति का तीसरा कोई उपाय नहीं है।

करकण्डू को दधिवाहन से इस प्रकार के कटाक्षपूर्ण प्रत्युत्तर की तनिक भी आशंका नहीं थी। अपमान और अवमानना से परिपूर्ण व्यवहार से वह न केवल आग बबूला हुआ अपितु उसकी चुनौती को स्वीकार कर युद्ध का शंखनाद कर दिया। घबराते-सकुचाते ब्राह्मण ने निवेदन भी किया कि-राजन् ! मेरी खातिर आपको इस प्रकार का खतरा उठाने की जरूरत नहीं है। गाँव की मुझे कोई अत्यन्त अपेक्षा नहीं है। मैं तो दोनों ही परिस्थितियों में प्रसन्न हूँ चाहे ग्रामाधिपति बनूं अथवा न बनूं। इधर करकण्डु के लिये मान-अपमान की अपेक्षा वचन-प्रतिबद्धता का महत्त्व था।

करकण्डू ने दत्त-वचन के प्रति निष्ठा अभिव्यक्त करते हुए कहा-विप्रवर! बात न ग्राम की है, न जन्म-मृत्यु की। मेरे लिये अभी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य है-वचन भंग के महापाप से बचना। प्रदत्त वचन का पालन करना हर व्यक्ति का धर्म है, चाहे वह राजा हो अथवा रंक। उसके लिये प्राणों को यदि बलिदान की वेदी पर होमना पड़े तो भी पीछे नहीं हटना, यह क्षात्र धर्म का गौरवपूर्ण सम्मान है। मैं नहीं चाहता कि आने वाली पीढ़ी कमजोर, कायर और वचन से मुकरने वाले के रूप में अंकित करते हुए मुझे धिक्कारे, मेरे नाम व काम पर थूं....थूं.. ..करें।

पर महाराज! मेरा कोई दुराग्रह नहीं है कि मुझे मेरा ही गाँव मिले। आप वचन-प्रतिबद्धता के लिये अपने राज्य से ही कोई गाँव दे दें तो भी कोई आपत्ति नहीं होगी। आप चंपापति से टकराने की जोखिम मत उठाइए, यह मेरा सविनम्र निवेदन है।

तुम मेरे बाहुबल के संदर्भ में सशंकित हो तभी इतनी कमजोर बातें कर रहे हो। तुम निश्चिंत रहो। फिर खतरों से खेले बिना जिन्दगी का मजा भी क्या है?

ओह....! आदमी का प्रमत्तता, अज्ञानदशा और मोह की प्रबलता तो देखो कि वह भाई-भाई, पिता-पुत्र के बीच युद्ध का तनाव खड़ा कर देती है।

करकण्डु नहीं जानता कि समरभूमि में वह जिनसे भिड़ने-लड़ने जा रहा है, वे कोई और नहीं, उसके पूज्य पिताश्री है। चंपानरेश नहीं जानते कि जिसे वे अपनी भूमि का एक इंच भी देने से इंकार कर रहे हैं, वह कोई और नहीं, उन्हीं का वारिस है।

सेना सुसज्जित हो रही है।

तलवारें तैयार है शत्रु-शिरच्छेद के लिये।

धनुष-बाण में प्राण फूंके जा रहे हैं।

और भीतर में आवेग है....कषाय की ज्वालाएँ है, मान-अपमान का प्रश्न सता रहा है।

ओह....! छोटी सी आन के लिये कितने निर्दोष लोग मारे जाएंगे?धरा रक्तरंजित होगी....आकाश हाहाकार कर उठेगा। है कोई इस अज्ञानदशा से उबारने वाला। कोई है उसका त्राता, भ्राता और प्रेम का पाठ पढ़ाने वाली माता।

दो आँखें झांक रही है अतीत के गवाक्ष से। पिता-पुत्र एक-दूसरे से अनजाने हैं पर उनके संबंधों के सेतु पर खड़ी है साध्वी पद्मावती। यकायक उसके सम्मुख तैर गयी है बहुत सारी भूली-बिसरी यादें।

(क्रमशः)

खरतर सहस्राब्दी गौरव वर्ष आलेख

जिन शासन की अमर पूंजी : चार दादा गुरुदेव

प्रथम दादा श्री जिनदत्तसूरि

अरिहंत परमात्मा का जयवंत शासन अनूठा है। परमात्म-शासन रूप रथ के सारथी गुरु भगवंतों की अद्वितीय महानता सदा काल से भारत भूमि को अभिभूत करती रही है।

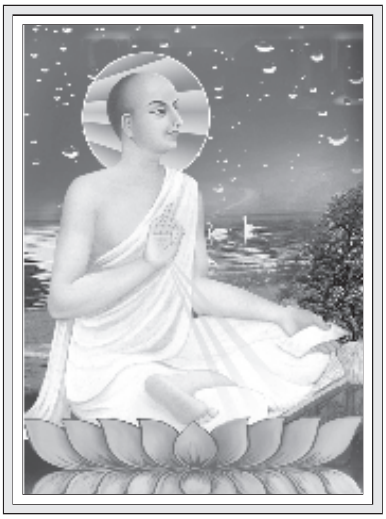

इतिहास के गवाक्ष से झांकते हैं तो शासन शृंगार श्री जिनदत्तसूरि आदि चारों दादा गुरुदेवों का जीवन मुमुक्षुओं के लिए पवित्रता का पाथेय स्वरूप नजर आता है।

प्रथम दादा श्री जिनदत्तसूरि का जन्म गुर्जर प्रान्त के ऐतिहासिक नगर धोलका - धवलक्कपुर में वि.सं. 1132 में हुआ था। पिता वाछिगसा और मां वाहडदेवी की सूनी जीवन बगिया हरी-भरी हो गई पर मां अम्बिका देवी का कथन खाली कैसे जाता!

संसार की रौनक सोमचन्द्र के मन को न भाई। वि.सं. 1141 में मात्र नौ वर्षीय बालक संयम के राजमार्ग का यात्री बन गया। उन्हें गुरुदेव के रूप में खरतर बिरुदधारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि के शिष्य विद्वान् चारित्रनिष्ठ श्री धर्मदेव उपाध्याय की अनुशासना एवं उपासना की छाया प्राप्त हुई।

सात वर्ष तक पाटण में रहकर सोमचन्द्र मुनि ने शास्त्र, व्याकरण आदि का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया। सिद्धान्त शिरोमणि, पिण्डविशुद्धि प्रकरणकार श्री जिनवल्लभसूरि का स्वर्गवास होने पर स्थविराचार्य श्री देवभद्रसूरि ने सोमचन्द्र मुनि को वि. सं. 1169 वैशाख शुक्ला प्रतिपदा को आचार्य पद पर आरूढ़ किया।

चित्तौड़ की धरा गौरवान्वित हो उठी। सुयोग्य गच्छाधिपति की उपलब्धि से गच्छ ज्ञान-ध्यान की सम्पदाओं से समृद्ध होने लगा।

आचार्य श्री जिनदत्तसूरि का व्यक्तित्व कृतित्व का अनूठा आयाम था। उनकी सांसों में शासन की सरगम और आंखों में अमृत का सागर छलकता था। विक्रमपुर की महामारी उनके द्वारा संयोजित सप्त-स्मरण की संयोजना के दिव्य मंत्राक्षरों से पलायन कर गई थी।

गुरुदेव के प्रति श्रद्धाऐं शतगुणित हो उठी। उसका फल मिला - एक साथ 500 पुरुषों एवं 700 महिलाओं की भागवती दीक्षा! अपने जीवन काल में एक लाख तीस हजार परिवारों को जैन बना कर शासन को आबाद किया तथा सन्देह दोलावली, उपदेश रसायण, गणधर सार्ध शतक, चर्चरी आदि अद्‌भुत ग्रन्थों की रचना कर श्रुतभंडार को समृद्ध किया।

गुरुदेव के जीवन में चमत्कार सहज ही घटित होते रहे। यथा- 64 योगिनियों का स्तंभन, विद्युत् स्तंभन, अंधे को दृष्टिदान आदि! त्रिभुवनगिरि नरेश कुमारपाल आदि अनेक राजा आपके पवित्र सत्संग से शासन के भक्त बने। माता अम्बिका ने उन्हें युगप्रधान के दिव्य संबोधन से सारी जनता को परिचित कराया।

ज्ञान-ध्यान के अविचल सुमेरु श्री जिनदत्तसूरि ने कषायों की आग में जलती आत्माओं को इतना वात्सल्य दिया कि वे उन्हें 'दादा' के अलंकरण से नवाजने लगी। अजमेर में गुरुदेव चातुर्मासार्थ पधारे थे। पर नियति को कुछ और ही स्वीकार था। वि. सं. 1211 आषाढ़ शुक्ला एकादशी को गुरुदेव समाधि पूर्वक स्वर्ग सिधार गये।

अग्नि संस्कार में अक्षुण्ण रहे चादर, चोलपट्टक, मुहपत्ति आज भी जैसलमेर के श्री जिनभद्रसूरि ज्ञान भण्डार में दर्शनार्थ उपलब्ध है। माँ अम्बिका के कथनानुसार श्री जिनदत्तसूरि एकावतारी, देव रूप में प्रथम देवलोक में समुत्पन्न हुए।

द्वितीय दादा मणिधारी जिनचन्दसूरि

प्रथम दादा गुरुदेव के ही शिष्य, पट्टधर, मस्तिष्क में मणि से सुशोभित, मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि भी शासन के ऐसे महानायक हैं जिन्होंने मात्र साढ़े छह वर्ष की उम्र में दीक्षित होकर आठ वर्ष की उम्र में आचार्य पद प्राप्त किया। उनका जन्म विक्रमपुर में वि. सं. 1197 भाद्रपद शुक्ल 8 को पिता शाह रासल माता सौ. वेल्हणदेवी के गृहांगण में हुआ था। साढ़े छह वर्ष की उम्र में वि. सं. 1203 फाल्गुन शुक्ल नवमी को दीक्षित होकर उन्होंने प्रत्युत्पन्न मेघा से शास्त्रों को अल्पकाल में ही हृदय में स्थापित कर लिया। मात्र सवा वर्ष पश्चात् वि. सं. 1205 वैशाख शुक्ल 6 को उन्हें आचार्य पद प्रदान किया गया। साधना के उत्तम परिणाम स्वरूप आत्म-शक्तिमयी दिव्य मणि उनके भाल में चमकने लगी।

एकदा संघ के साथ जंगल से विहार कर रहे थे, तभी मार्ग में डाकुओं का एक दल लूटने के इरादे से आ गया। उस गुरुदेव ने धर्मदण्ड से ऐसी लकीर खींची कि पास से जाते संघ को डाकू देख ही नहीं पाये। यद्यपि दादा जिनदत्तसूरि ने उन्हें दिल्ली जाने का मना किया था। पर नियतिवश मदनपाल राजा के अत्याग्रह से वे दिल्ली पधारे। वहाँ मिथ्यात्विनी दो वि. संवत् 1223 में दो भाद्रपद थे। द्वितीय भाद्रपद की कृष्ण चतुर्दशी को उनका स्वर्गवास हो गया। स्वर्गवास से पहले दी हुई हितशिक्षाएँ शोकमग्न संघ भूल गया। परिणामस्वरूप बीच रास्ते में पालखी को विश्राम दिया गया। बाद में पालखी गजराज द्वारा भी टस से मस नहीं हुई। इसके साथ-साथ गुरुदेव की काया के सम्मुख दुग्धपात्र रखना भी भूल गया, अत: वह मणि संघ को प्राप्त नहीं हो पाई। उनके नाम को अमर रखने के लिए खरतरगच्छ में हर चौथे आचार्य का नाम 'जिनचन्द्रसूरि' रखने की परम्परा का सूत्रपात हुआ।

तीसरे दादा जिनकुशलसूरि

जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र दादा श्री जिनकुशलसूरि का नाम सर्वविदित है। गढसिवाना नगर में आपका जन्म वि.सं. 1337 के मिगसर वदि 3 को हुआ। लघुवय में ही जीवन की वाटिका में वैराग्य के पुष्प पल्लवित हुए और वि.सं. 1346 के फाल्गुन शुक्ल 8 को गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरि के पास दीक्षित हुए जो संबंधों की अपेक्षा से उनके सांसारिक चाचाजी लगते थे।

गोरा एवं काला दोनों भैरव आपको साधना से विचलित करने आये पर पर्वत को राई का प्रहार कैसे चलित कर सकता था। वे दोनों कुशल गुरुदेव से सम्यक्त्व प्राप्त कर उनके प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो गये।

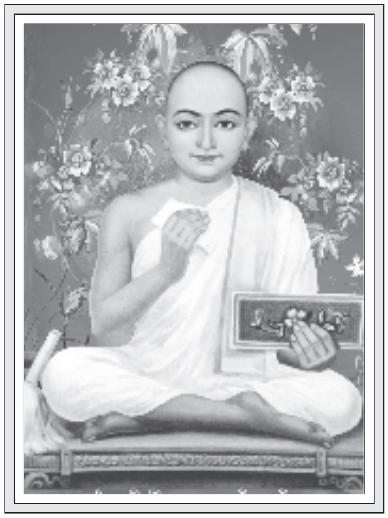

नगर-नगर में जैनत्व की अलख जगाकर आपने पचास हजार अजैन परिवारों को मोक्षमार्ग का प्रकाश दिया। गयासुद्दीन आपकी निर्मल आभा से प्रभावित था। सुयोग्य जानकर आपको वि.सं. 1377 के ज्येष्ठ वदि 11 को पाटण नगर में आचार्य पद से विभूषित किया गया। आपकी पावन निश्रा में श्री सिद्धाचल तीर्थ पर खरतरवसही की स्थापना की गई जिसमें सैकड़ों जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा हुई, जिनमंदिर बने। शासन एवं गच्छ के अनेक कार्य करते हुए जिनकुशलसूरि देवराजपुर जिसे वर्तमान में पाकिस्तान के देराउर के नाम से जाना जाता है, में वि.सं. 1389 के फाल्गुन वदि अमावस्या को स्वर्गवासी बने।

आज भी आपके नाम में परम शक्ति है। महोपाध्याय श्री समयसुन्दरजी, जिनसुखसूरि आदि की नौका तिराने के साथ हजारों-हजारों चमत्कार आपके स्मरण से घटित हुए हैं एवं आज भी हो रहे हैं।

चतुर्थ दादा जिनचन्द्रसूरि

अकबर प्रतिबोधक चतुर्थ दादा गुरुदेव के रूप में सुप्रसिद्ध जिनचन्द्रसूरि का व्यक्तित्व बहु आयामी था। आपका जन्म खेतासर में वि.सं. 1595 चौत्र वदि 12 के दिन पिता रीहड़ गोत्रिय श्रीवंत शाह माता श्रियादेवी के गृहांगन में हुआ था। अपने गुरुदेव आचार्य श्री जिनमाणिक्यसूरिजी के स्वप्न को साकार करने के लिए बीकानेर में क्रियोद्धार किया। जब धर्मसागर उपाध्याय ने नवांगी वृत्तिकार श्री अभयदेवसूरि को खरतरगच्छ में नहीं होने का प्रलाप किया, तब आपने दो बार शास्त्रार्थ के लिए आह्वान किया पर वे नहीं आये।

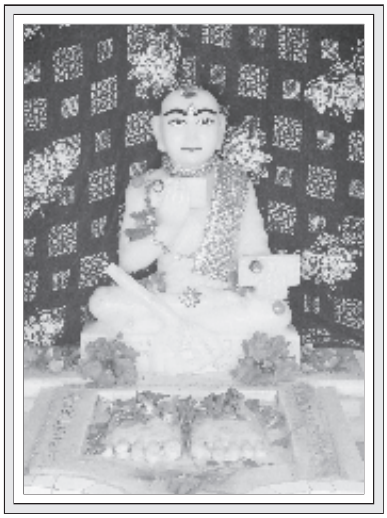

उस समय पचासों आचार्यों / उपाध्यायों / मुनियों के द्वारा विविध प्रमाणों के साथ इस सत्य को उद्घोषित किया गया कि नवांगी वृत्तिकार अभयदेवसूरि खरतरगच्छ में ही हुए थे। यह निर्णय पत्र श्री समयसुन्दरोपाध्याय रचित सामाचारी शतक में विस्तार से प्रकाशित है।

संग्रामसिंह बच्छावत, कर्मचन्द्र बच्छावत आदि आपके परम भक्त थे। आपके सुयश की सुगंध से प्रभावित होकर अकबर बादशाह आपका परम भक्त बना था। वह आपको बड़े गुरुजी के नाम से संबोधित करता हुआ आपका परम आदर करता था। बकरी भेद, अमावस की पूनम, काजी की टोपी आदि अनेक चमत्कार आपके साधना-बल से सहज ही प्रकट हुए थे। अकबर ने आपको 'युगप्रधान' पद से विभूषित किया तथा आपके अहिंसक उपदेशों से प्रभावित होकर कुल छह माह की अमारि के जो फरमान जारी किये, वे आज भी उपलब्ध हैं।

आपके काल में शासन की अभूतपूर्व प्रभावना हुई एवं गच्छ की तेजस्विता बढ़ी। आपके द्वारा पालीताना, बीकानेर आदि अनेक स्थानों पर प्रतिष्ठाएँ सम्पन्न हुई।

बिलाड़ा नगर में वि.संवत् 1670 आसोज वदि 2 को आपका समाधिमय स्वर्गवास हो गया। यह आपकी अनूठी साधना का परिणाम था कि अग्निसंस्कार में मुहपत्ति आदि आपके वस्त्र नहीं जले।

चारों ही दादा गुरुदेव के प्रति हम अपनी श्रद्धा समर्पित करते हैं।

नमो चरित्तस्स

सपना हुआ साकार

मणिगुरु चरण रज मुनि मयूखप्रभसागरजी म.

आज माघ शुक्ला चतुर्दशी का पावन दिन!

इस दिन का इंतजार मुझे पिछले 8 वर्ष से था। प्रात:काल की मंगल वेला में निद्रा का त्याग कर के प्रतिक्रमण किया। पश्चात् असीम उपकारी देवाधिदेव अवन्ति पार्श्व प्रभु के चरणों में श्रद्धा का दीप लिए पहुंचा।

भावों में एक ही नाद गूंज रहा था... श्रद्धा में एक ही लौ जल रही थी... हृदय में एक ही झंखना थी कि कब प्रव्रज्या मंडप में जाकर संसार रूपी दावानल से मुक्त होकर विरति का मुकुट अपने मस्तक पर धारण करूं!

कब दीक्षादाता के कर कमलों से मेरे हाथों में रजोहरण आए!

कब परम तारक गुरुदेव की वात्सल्यमयी गोद में मस्तक रखूं!

कब मेरी देह पर गौतमस्वामी का धवल उज्ज्वल वेश आए!

कब मेरी आंखों में ईर्यासमिति का बोध आए!

कब मेरे विचारों को सम्यग्ज्ञान की निर्मल दिशा मिले!

कब संपूर्ण इच्छाओं पर पूर्ण विराम लगकर गुरु आज्ञा का ताज मिले!

इन सभी विचारों में डूबे मन को अथाह आनंद था और उसी आनंद में मैंने अवन्ति पार्श्व प्रभु की अंतिम द्रव्य पूजा की।

भावपूर्वक जिनमंदिर विधि के पश्चात् अब अंतिम सांसारिक वेश को धारण करने के लिए अपने कक्ष में पहुंचा। सारे परिवार जन उपस्थित थे। सब का हृदय... सबकी आंखें... रुदन कर रही थी, पर मेरे हृदय में परमानंद... अनहद प्रसन्नता थी। वह तो होनी ही थी, क्योंकि आज प्रभु का धवल वेश मिलेगा! आज से गुरु की छत्रछाया में सदा-सदा रहने का सौभाग्य प्राप्त होगा। माता-पिता अपनी गोद में मुझे लेकर रो रहे थे तो इधर गुरुदेवश्री प्रतीक्षारत थे अपने शिष्य को गोद में भरने के लिए। एक को संयोग का हर्ष तो दूसरी ओर परिवार को वियोग की पीड़ा थी।

देह की साज-सज्जा और सांसारिक परिवेश का परिवर्तन करने के लिए मेरे कदम अवन्ति तीर्थ से चतुर्विध श्रीसंघ के साथ प्रव्रज्या पांडाल की ओर बढ़े। एक ही लक्ष्य... एक ही ध्यान... कि 'मैं अतिशीघ्र प्रव्रजित बनूँ' इसी खुशी से पांव थिरकने लगे। उन थिरकते पावों ने नृत्य का आकार लिया। झूमता हुआ... नाचता हुआ मैं पहुंच गया विरति मंच पर। समवशरण में चारों दिशाओं में परमात्मा विराजमान, सिंहासन पर अपने शिष्य-परिवार के साथ गुरुदेवश्री विराजमान, इधर सामने अनेक वीर आर्याएं विराजित थी। और जब सामने की ओर निगाहें रखी तो आश्चर्यचकित हो गया जनमेदिनी को देख कर। क्योंकि सोचा नहीं था कि मुझे आशीर्वाद प्रदान करने के लिए इतने पुण्यवन्तों का सहयोग मिलेगा।

संसार की भ्रमणा मिटाने हेतु मैंने परमात्मा की तीन प्रदक्षिणा की और अब धवल वेश पाने के लिए... रजोहरण प्राप्त करने के लिए... एडिडास की कंपनी को छोड़कर आदिनाथ का दास बनने के लिए... वीर पथ अपनाने के लिए दीक्षा विधि प्रारंभ की। विधि के अंतर्गत अंतिम विदाई तिलक का विधान प्रारंभ हुआ, जिसमें मैंने माता-पिता का अंतिम आशीर्वाद प्राप्त किया। गुरुवर्याश्री को अंतिम वंदन करने पहुंचा, जिन्होंने मुझ कच्ची मिट्टी को घड़े का आकार दिया, योग्य बनाया। मुझे कवि की वह पंक्ति याद आयी- अंदर हाथ सहार दे, ऊपर मारे चोट।

मुझे योग्य बनाने के लिए गुरुवर्याश्री ने अनहद

(शेष पृष्ठ 14 पर)

खरतर पच्चीसी

—वाचक रत्नसोमजी महाराज

।। दोहा ।।

सरसती माता समर के, सद्गुरु लागी पाय।
खरतर पच्चीसी कहूं, चाल्या थी सुख थाय।।1।।
खरतर करणी साधु की, खरतर विद्या सिद्ध।
खरतर लच्छी थिर रहे, खरतर मोटी बुद्ध।।2।।
खरो मार्ग खरतर कहै, खरो जे पाले धर्म।
खरी वाते सुजश लहै, खरतर काटे कर्म।।3।।
खरतर खरतर क्या करो, खरतर है जिनराज।
खरो धर्म पाल्या थकी, सरेसु आतम काज।।4।।
खरी बात खरतर कहैं, खरी क्रिया पालंत।
खरा साधु जिनराज ना, तिणे खरतर कहंत।।5।।
खरतर शुद्ध क्रिया करे, खरतर बोले सांच।
खरतर सामी धर्म ना, खरतर गुरु ने जाँच।।6।।
खरतर सूं खूब हेतकर, खरतर गुरु ने सेव।
खरतर देवता जिके, खरतर सरखी टेव।।7।।
खरतर राम समरो सदा, खरतर देखो आप।
खरतर मार्गे चालंतां, नहीं लागसी पाप।।8।।
खरतर कहलाय लियो, खरतर पाल्यो नही मार्ग।
खरतर नाम धरायके, कहाँ जायगो भाग।।9।।
खरतर शुद्ध साधु तणी, सेवा कीजो आप।
खरतर जति जग में भला, कापे भव भव ना पाप।।10।।
खरतर खरतर क्या करो, खरतर है जिनधर्म।
खरतर खूब क्रिया करी, खरतर काटे कर्म।।11।।
खरतर जिनभजन करे, खरतर साधु शील।
खरतर तप ध्यानी हुआ, खरतर स्वर्ग सलील।।12।।
खरतर जग में जाणीये श्रीजिन केरो मार्ग।
खरतर साधु पूजतां, कर्म जाए सब भाग।।13।।
खरतर जति जैन का, खरतर बतावे तत्त्व जेह।
तप ध्यान शील संतोष थी, नहिं इंद्रियों थी नेह।।14।।
खरतर पंचव्रत पालसी, खरतर इंद्रियजीत।
खरतर मुनि के ध्यान से, नहि उपजे कोई भीत।।15।।
खरतर मद आठे तजे, खरतर पाले मार्ग।
खरतर शुद्ध क्रिया करे, जाए कर्म सब भाग।।16।।
खरतर जाति जग में भली, खरतर साधु जेह।
खरतर क्रोड़ गौरी तजे, नहीं किसी से नेह।।17।।
खरतर शुद्ध संजम विषे, चले सरदहे सार।
खरतर मार्गे चालसी, जद उतरंसी पार।।18।।
खरतर साधु कहलाय के, दमड़ी चमड़ी दाम।
बुद्धनाम धराय के, नहीं सरे कोई काम।।19।।

खरतर माया त्यागसी, खरतर तजसी क्रोध।
खरतर वाणी साँच की, जीते आठ कर्म जोध।।20।।
खरतर जीवदया राखो, खरतर दूषण टाल।
खरतर शुद्ध संजम थी, टले दुःख अरु काल।।21।।
खरतर जोगी जैन का, खरतर साधु सन्त।
खरा महाव्रत पालसी, सोहि मुक्तिवधु कन्त।।22।।
खरतर मारग दाखियौ, दाखी खरतर चाल।
वाणी है जिनराज नी, मत देजो कोई गाल।।23।।
'रत्नसोम' खरतर गुरु, भाखी सुखकर वाण।
माघ सित चढती कला, नहीं किसी की कांण।।24।।
खरतर पच्चीसी खरी, कही चतुर चिद्रूप।
अज्ञानी सुण दुखी हुसी, पडसी अन्धारे कूप।।25।।
संवत अढारे छप्पन्ने, जयवंति में आप।
''सोम' खरतर साख सुणतां, मिटै कर्म अरु पाप।।26।।
।। इति वाचक रत्नसोम रचित खरतर पच्चीसी।।
(श्री जिनहरिसागरसूरि ज्ञानमंदिर पालीताना के संग्रह से
—दादा चित्र संपुट से संपादन सहित साभार)

(शेष पृष्ठ 12 का)

सपना हुआ...

वात्सल्य से नहलाया था तो मेरी गल्तियों के कारण ताड़ना तर्जना भी की थी। मेरी उम्र भी तो 7 - 8 वर्ष की थी, जब मैं गुरुवर्याश्री के सांनिध्य में आया। अगर मुझे वे शिक्षा न देते तो शायद ही इस विरति मंच पर पहुंच पाता। मेरे अंतिम वंदन से गुरुवर्याश्री गदगद हुई। न केवल उनकी अपितु पूरे शिष्या मंडल की आंखें भी छलक गई। उनके वात्सल्य ने मुझे द्रवित कर दिया। कभी नहीं भूला पाऊंगा उन मातृहृदया गणिनी साध्वी सूर्यप्रभाश्रीजी म. एवं ममतामयी पूर्णप्रभाश्रीजी म. के उपकारों को।

बस अब वह प्रतीक्षा समाप्त होने जा रही है... जो सपना बचपन में मैंने संजोया था, वह सपना साकार रूप ले रहा है... अब कदमों की थिरकन बढ़ती ही जा रही थी... मेरी संपूर्ण निगाहें गुरुदेव के हाथों में उठे हुए रजोहरण की ओर थी...।

गुरुदेव ने भी कहाँ कम परख की थी रजोहरण देने से पूर्व मेरी परीक्षा! एक सच्चे पारखी की भांति की। मेरे भावों की दृढ़ता व पूर्णता का अनुभव करने पर परमात्मा की साक्षी, अनंत सिद्धों की साक्षी, चतुर्विध संघ की साक्षी से गुरुदेवश्री ने अभिमंत्रित.. महिमा-मंडित... देवों को परम दुर्लभ ऐसा रजोहरण प्रदान किया।

सच बताऊं तो मेरी जिंदगी का वह प्रथम क्षण था, जिसने मेरी जिंदगी की झोली रूप दामन में अनंत खुशियां भरी थी! क्या दृश्य था वह! जिस पल गुरुदेव ने अपने कर-कमलों से रजोहरण अर्पण किया और मेरी जिन्दगी का आखिरी नृत्य प्रारंभ हुआ। जिंदगी में बहुत नाचा हूँ, पर इस नाच ने सारे जहां की खुशियां मुझ में भर दी थी। इससे कई गुणा आनंद गुरुमां की गोद को पाकर हुआ। मेरा रूप बदला... परिवेश बदला... नाम बदला... अब सदा-सदा के लिए अपना सर्वस्व गुरु-चरणों में समर्पित कर दिया।

मैंने अपने जीवन की बागडोर उनके हाथों में थमा दी। गुरुराज का नितरता नेह, वात्सल्य से सराबोर हृदय... मेरे मन को इतना भा गया कि इस वात्सल्य के आगे सारी दुनिया फीकी लगी।

मैं **म**हावीर के पथ पर... **म**हाभिनिष्क्रमण के मार्ग पर सांसारिक पिताजी श्री **मो**तीलालजी से विदा होकर **मो**हयुक्त जीवन का त्याग कर पंच **म**हाव्रतधारी **मु**नि बन गुरु **म**णिप्रभसूरिजी म. का चरण रज बन कर **मु**क्तिपुरी पाने के लिये **म**यूखप्रभ बना। सिंह राशि का बना यह योग चारित्र जीवन में मुझे **सिंहत्व** देगा।

धारावाहिक
कथा
6

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

पंडितजी आगे कुछ सुन नहीं पाये। उनका दिमाग जैसे कुंद हो गया! जिस राजकुमार की योग्यता पर उन्हें गहरा नाज था। उस राजकुमार की ऐसी घिनौनी विचारधारा। भविष्य में प्रजा की सुरक्षा की वल्गा जिन हाथों में सौंपी जानी हैं वे ही हाथ अभी चौर्य कर्म में लगे हुए है। यह हाथ सुरक्षा में उपयोगी होंगे अथवा क्षात्रधर्म का कलंक बनेंगे?हे प्रभु! यह मेरा कौनसा पाप प्रकट हुआ हैं कि अपने ही पुत्रवत् पोषित राजकुमार के अपराध को मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूँ।

पंडितजी असमंजस में थे कि इस भयावह स्थिति में उनका कौनसा कदम उनके कुमार के राजा एवं प्रजा के लिये मंगलदायी होगा। अगर उन्होंने इस घटना को गुप्त रखा तो राजकुमार के हौसले और बुलन्द हो जायेंगे। राजा को अगर समय पर कुमार के हरकतों की सूचना मिले तो संभव हैं वे पितृधर्म एवं राजधर्म का पालन करते हुए कुमार का हृदय परिवर्तन करे!

पंडितजी का चेहरा इस घटना से म्लान हो गया। राजा के पास जाने की शीघ्रता न करते हुए उन्होंने कुछ दिनों का अंतराल देना उचित समझा ताकि वे अपने निर्णय को और अधिक शुद्ध कर सके।

इस दुर्घटना के बाद आश्रम में दो-तीन दिन तक तो सन्नाटा रहा पर धीरे-धीरे आश्रम की गतिविधियाँ पुनः रोजमर्रा की तरह चलनी शुरू हो गयी पर पंडितजी का मन भी अशांत ही रहा।

आखिर उन्होंने राजसभा में जाने का निर्णय लिया। वे समझ गये कि जब तक राजकुमार की करतूत राजा को नहीं बतायेंगे तब तक उन्हें चौन नहीं होगा।

वे राजा को बिना सूचना दिये ही अपने शिष्य को साथ में लेकर राजदरबार के लिये रवाना हो गये। आश्रम में सभी को यही बताया गया कि अनिवार्य कारण से वे राजा से मिलने जा रहे हैं। पलभर के लिये तो राजकुमार को चिन्ता हुई यह अचानक जाने का कारण क्या है?कहीं ऐसा तो नहीं कि पंड़ितजी को कुछ भनक लग गयी हो। पर पुनः दूसरे मन ने कहा- पागल हूँ मैं जो ऐसा सोचता हूँ जबकि बात खुलने का कोई अवसर ही नहीं है। पंड़ितजी कोई भगवान है जो उन्हें ज्ञान होगा। संभवतः आश्रम की सुविधा के लिये गुरुजी राजा के पास जा रहे होंगे।

पंड़ितजी क्रमशः पदयात्रा करते हुए ढ़िंपुरी नगरी में तीन दिन बाद पहुँच गये। वे राजा से मिलने की बजाय सीधे अतिथि घर चले गये। अतिथिगृह पहुँचते-पहुँचते संध्या हो गयी थी अतः उन्होंने दूसरे दिन ही राजा से मिलने का निर्णय किया।

पंड़ितजी खुली छत पर जाकर रात्रि में सो गये पर नींद उनकी आँखों से गायब थी। रह रहकर उनकी आँखों में कुमार की मासूम छवि उभर रही थी। उन्हें आपको मेरा आचरण उचित नहीं लगा तो आप मुझे गिराकर अपनी ही गरिमा को खंडित किया है। शिक्षक का गौरव अपने शिष्य की भूलों का परिष्कार हैं न कि प्रचार।

पंड़ितजी पूरी रात स्वयं के दो मन के बीच उलझे रहे, कभी पहला मन जो राजा से सारी बात बताना चाहता था, वह भारी पड़ता तो कभी दूसरा मन जो स्वयं गुरु के रूप में शिक्षित और दीक्षित करना चाहता था, वह भारी पड़ता पर अंत में उन्होंने निर्णय लिया कि एक बार वे स्वयं राजकुमार को समझायेंगे।

दूसरे दिन पंड़ितजी ने सूर्योदय से पूर्व ही अपने आश्रम की ओर प्रयाण कर दिया। अब उनका मन शांत था। लक्ष्य स्पष्ट था। सारी उलझनों से अब वे मुक्त थे। समय क्रमशः बीतता रहा। आश्रम का कामकाज अध्याय आदि व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ता रहा। पंड़ितजी की जुबां पर सदैव राजकुमार को शिक्षा देने की बात आती पर पुनः यही सोचकर शांत हो गये कि अगर दुबारा अनुचित व्यवहार हुआ तो ही कहना व्यवहारिक होगा।

पुष्पचूल ने भी ऐसा दुबारा कोई मौका नहीं दिया कि जिससे गुरुजी द्वारा दण्ड़ मिले। संभवतः आश्रम जीवन के

शुद्ध वातावरण में वह अपराध करने से घबरा गया।

गुरुजी! अभी तक वर्षों पूर्व घटी घटना भूल नहीं पाये थे। यद्यपि पुष्पचूल का व्यवहार पूर्णत: संतुलित था पर गुरुजी उसके द्वारा जानकर संतुष्ट होना चाहते थे पूर्व घटना मात्र नादानी थी अब वह पूरी तरह राजधर्म से अनुकूल था।

एक दिन अवसर देखकर उन्होंने एकान्त में पुष्पचूल से पूछा- राजकुमार ! अब तुम युवावस्था में पहुँच गये हो। तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा भी पूरी हो गयी है। कुछ ही दिनों में अब तुम आश्रम से विदा होकर अपनी राजधानी में पहुँच जाओगे, जहाँ शीघ्र ही शुभ मुहूर्त्त में तुम्हें युवराज का पद देकर राज्य व्यवस्था सौंप दी जायेगी। मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम अपनी प्रजा के साथ कैसा व्यवहार करोगे?

राजकुमार अपने गुरुजी की इस प्रश्नावलि से घबराया पर शीघ्र ही उसके चेहरे पर मोहिनी मुस्कान फैल गयी। उसने अत्यन्त नम्रता से कहा-गुरुदेव! मेरी प्रजा मेरे जीवन की सबसे मूल्यवान धरोहर रहेगी। अपनी प्रजा के कल्याण के लिये मैं प्रतिपल सावधान रहूंगा। मेरे रक्त की प्रत्येक बुंद में मात्र मेरी प्रजा की खुशियाँ ही समायी हुई रहेगी।

आचार्य स्वयं निष्कपट थे। उनकी निर्मल आत्मा हृदय और होठों का अंतर नहीं समझ पायी। उन्हें लगा राजकुमार की वह त्रुटि युवावस्था आते-आते परिमार्जित हो चुकी है। अब यह अपने राजधर्म के कर्तव्यों से भली भांति अवगत हो गया है।

उन्होंने अपने कथन को और अधिक पुष्ट करने के लिये आगे पूछा- अपने कोष के विस्तार में तुम्हारा कौनसा कदम रहेगा?

राजकोष का विस्तार जरूर करूंगा पर प्रजा को पीड़ित करके नहीं, बल्कि उनके व्यापार का विस्तार करके। कोष इसीलिये आवश्यक है कि इसी से राज्य कल्याण के सारे कार्यों का संपादन होता है। राजकोष पर मैं अपना व्यक्तिगत अधिकार रखकर उसका उपयोग करने कीअ पेक्षाउ सेप्र जाक ीअ मानतस मझतेह ुएउ सीक` कल्याण में उसका उपयोग करूंगा। पंड़ितजी न्याय और नीति मेरे जीवन के उड़ान की दो पाँखें होगी। इन पाँखों से विकास की उड़ान भरता हुआ मैं प्रजा के हृदय सिंहासन पर बैठकर ही राज करूंगा।

पंड़ितजी जैसे निहाल हो गये। उन्हें लगा- एक राजा के निर्माण का उन्हें भरपूर यश मिलेगा। आने वाले समय में इतिहास जितना गौरव इस राजा का गायेगा उतना ही मेरा भी जायेगा। इस राजा के गौरवशाली जीवनपृष्ठों से जुड़कर मैं भी अमर हो गया हूँ। वे आँखें मूंदकर भविष्य की सुनहरी आभा में खो गये।

राजन् ! मणिपुर राजा का दूत आपके दर्शनों की आज्ञा मांग रहा है। अगर आज्ञा हो तो उसे अंदर भेजूं। प्रतिहारी ने सामंत, नगरसेठ, सेनापति एवं गणमान्य नागरिकों से भरी सभा में उपस्थित होते हुए निवेदन किया।

राजा अचानक पड़ौसी राजा के दूत की उपस्थिति से अचंभित तो हुआ पर, उसने हल्के से स्वीकृतिसूचक गर्दन हिलाते हुए राजसभा में दूत को भेजने की अनुमति प्रदान की।

दूत ने अंदर आकर प्रणाम किया और अपने स्वामी कीअ ोरस`क ुशलताक ाम ंगलस ंदेशद`नेक`स ाथह ी अपने बगल थेले में छिपाये विशाल चित्र को राजा के सामने प्रस्तुत किया। चित्र उभरती हुई एक षोडशी का था। राजा ने उस चित्र को गहरी नजर से देखने के बाद पूछा- बोलो दूत! यह चित्र मुझे बताने के पीछे तुम्हारा क्या प्रयोजन है?

दूत ने नम्रता पर गौरव से कहा- राजन! यह हमारे अन्नदाता राजा की अत्यन्त सुंदर गुणियल रूपमल्लिका राजकुमारी है। अभी हमारे राजा ने मंत्री परिषद की अनुमति से यह चित्र आपको देखने के लिये भेजा हैं कि अगर आपकी अनुमति हो तो हम अपनी राजकुमारी का संबंध युवराजश्री से तय करें।

राजा यह सुनकर आल्हाद से भर उठा। राजकुमारी के चेहरे पर छायी मासूमियत और उसकी बड़ी-बड़ी कजराली आँखें उसके हृदय की पवित्रता को प्रकट कर रही थी। राजा ने तुरंत वह चित्र अपने समीप छोटे सिंहासन पर बैठे युवराज को देते हुए कहा- युवराज! आपके दूत का संदेश तो सुना दिया है। मैंने तो यह चित्र देखा ही है। अभी महारानी को भी देखने के लिये भेजेंगे। पर आप भी देखें कि क्या यह संबंध हम स्वीकार करें, क्योंकि हमारी अपेक्षा से यह संबंध पूर्णत: उचित है। सुनकर राजकुमार की आँखें एक बार तो झुक गयी पर उसने चोर निगाहों से चित्र में मुस्कुरा रही राजकुमारी को देखा तो देखता ही रह गया! उसकी आँखें तो जैसे बुला ही रही थी। (क्रमश:)

स्वानुभूति आलेख

अवन्ति तीर्थ की प्रतिष्ठा: अविस्मरणीय अनुभव

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

श्री अवन्ति तीर्थ की प्रतिष्ठा का मंगलमय वातावरण था। मैं मंत्रोच्चारण व मुद्राओं के साथ परमात्मा की प्रतिमा पर वासक्षेप कर रहा था। प्रतिष्ठा की झालर बज रही थी। घंटनाद की तीव्रता पूरे वातावरण को भक्ति भावों से आंदोलित कर रही थी।

मन का हर कोना मात्र अवंति पार्श्वनाथ प्रभु के भावों में डूबा था। स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ... की उच्च ध्वनि से उठी गूंज वर्तुलाकार में घूमती हुई... लगातार ऊपर की ओर गोलाकार उठती हुई... रंगमंडप की दादरी का चरम स्पर्श करती हुई... तीव्र आवेग के साथ पुन: नीचे आकर मस्तिष्क से टकराकर परम ऊर्जा दे रही थी।

पूरी रात का जागरण होने पर भी न आंखों में नींद थी... न आलस्य था। बल्कि चेहरे पर प्रफुल्लता का पूर्ण अनुभव था। चित्त में कोई विकल्प नहीं था। समाधि भरी एकाग्रता ने रोम रोम को उल्लसित कर दिया था।

रात के शुभ मुहूर्त्त में... नीरव.. एकान्त.. शान्त वातावरण में परिकर स्थित प्रतिमाओं सहित श्री सिद्धचक्र मंदिर, कल्याण मंदिर की 44 पादुकाओं आदि का अंजन विधान संपन्न हुआ था। अभिषेक के बाद समय बहुत कम था। प्रतिष्ठा का मुहूर्त्त सुबह जल्दी का था। भक्तों की भारी भीड़ थी। जन सैलाब उमड़ पडा था। केयुप के सैंकड़ों कार्यकर्त्ता व्यवस्था सम्हाल रहे थे।

सैंकड़ों वर्षों बाद अवन्ति तीर्थ के शिखर पर ध्वजा लहरा रही थी। मुख्य शिखर पर ध्वजा चढ़ा कर लाभार्थी संघवी कुशलजी गुलेच्छा परिवार अपने आपको परम सौभाग्यशाली अनुभव कर रहा था। उनके चेहरे पर छाये पुलक-भाव हृदय के भक्ति भरे भीगेपन को प्रकट कर रहे थे। मैंने वासक्षेप किया और ध्वजा का महान् लाभ प्राप्त करने हेतु संघवी परिवार को वर्धापना दी।

शिखर से चारों ओर का दृश्य देख रहा था। चारों ओर लोग ही लोग! नीचे उतरते हुए मैं अतीत की स्मृतियों में डूब गया।

स्मृतियाँ चित्र बन कर मेरी आंखों में तैरने लगी। सन् 1995 का यहाँ किया वह चातुर्मास! मुझे नहीं पता था उस समय कि यह चातुर्मास मेरे जीवन को नई सौगात देने वाला होगा।

वह चातुर्मास श्री जैन श्वे. अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ मूर्तिपूजक मारवाड़ी समाज ट्रस्ट, उज्जैन के तत्वावधान में हुआ था। इस तीर्थ की सुव्यवस्था इसी समाज के पास है। उसी चातुर्मास में इस तीर्थ के जीर्णोद्धार की भूमिका बनी।

चातुर्मास छोटा सराफा में स्थित श्री शांतिनाथजी मंदिर में था। लगभग एक कि.मी. दूर अवन्ति तीर्थ है। हम प्रतिदिन दर्शन करने आते।

तब मंदिर भोंयरे में था। छोटा-सा हॉल था। हॉल में एक वेदिका पर बिराजमान थे अवन्ति परमात्मा! उनके दायीं ओर आदिनाथ प्रभु प्रभु व बायीं ओर पार्श्वनाथ प्रभु की विशाल प्रतिमा विराजित थी। आदिनाथ प्रभु के पीछे नेमिनाथ प्रभु की छोटी प्रतिमा भी विराजमान थी। नेमिनाथ परमात्मा तो ध्यान से देखने पर ही नजर आते थे।

प्रतिदिन पूजा करने वाले स्थानीय भक्तों को छोड़ दें तो बाहर से आने वाले यात्रियों में से मुश्किल से 10 प्रतिशत लोगों ने उस प्रतिमा के दर्शन किये होंगे।

परमात्मा अवन्ति प्रभु का अद्‌भुत आकर्षण था। नियमित दर्शन करने आना ही आना! कल्याण-मंदिर का पाठ करना ही करना! उस चातुर्मास में नवगठित जिनेश्वर युवा परिषद् के युवा मंदिर आने में साथ होते थे। ट्रस्टी गण भी साथ आते थे।

एक दिन संकेत मिला! संकेत की परिभाषा थी कि जीर्णोद्धार का समय आ गया है। पुरुषार्थ को निश्चित ही सफलता मिलेगी। मैंने समाज के समक्ष जीर्णोद्धार की चर्चा की। थोड़ा समय तो लगा पर मारवाड़ी समाज ने सर्वसम्मति से जीर्णोद्धार का निर्णय लिया।

सन् 2007 में जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ होने पर जब छत को उतारा गया तो लोगों का मन भयमिश्रित आश्चर्य से भर उठा। क्योंकि छत में लकड़ी के पाट थे। प्राय: वे पाट सड़ चुके थे। कभी भी वे पाट अपना स्थान छोड़ कर नीचे गिर सकते थे।

इस कल्पना से ही लोग सिहर उठे कि यदि यह पाट नीचे गिर जाता तो परमात्मा की प्रतिमा को कितना नुकसान होता!

यह परमात्मा की अपूर्व कृपा रही कि समय पर जीर्णोद्धार कार्य प्रारंभ हो गया। इस बीच सन् 2012 में उज्जैन आना हुआ। जीर्णोद्धार कार्य प्रारंभ के बाद पहली बार आना हुआ था। हृदय प्रमुदित हो गया। कागज पर उतरा नक्शा पाषाण खण्डों में परिवर्तित होकर धरातल पर उतर आया था। मंदिर बिल्कुल नलिनीगुल्म विमान-सा प्रतीत हो रहा था। पाषाण-खण्डों की धवलता... रंगमंडप की विशालता... स्तंभों में कोतरणी की सूक्ष्मता... शिखर की ऊँचाई... सब कुछ देख कर मन आनन्दित हो उठा।

मुझे याद आ रहे हैं सम्मेतशिखरजी में सन् 2016 के दिसम्बर में संपन्न वांचना शिविर के वे क्षण, जिन क्षणों में श्री अवन्ति तीर्थ की प्रतिष्ठा के संबंध में चर्चा विचारणा प्रारंभ की थी।

बहिन विद्युत्प्रभा के साथ मैंने चर्चा की थी। चिन्तन था कि सन् 2018 में अवन्ति तीर्थ की प्रतिष्ठा का अवसर उपस्थित हो सकता है। बहुत बडे तीर्थ का कार्य है। संयोजक का उत्तरदायित्व किसे दिया जाय! यह यक्ष-प्रश्न हमारे सामने था। बहुत जिम्मेदार व्यक्तित्व... प्रभावशाली व्यक्तित्व... उदार और कार्यक्षम व्यक्तित्व, यशस्वी व्यक्तित्व हो, ऐसी हमारी सोच थी।

पता नहीं, किस आधार पर विद्युत्प्रभा ने कुशलजी का नाम प्रस्तावित किया था! क्योंकि उस समय तक कुशलजी का व्यवस्थागत व्यक्तित्व प्रकट नहीं हुआ था। उनकी संपन्नता, उदारता व समर्पण पर कोई प्रश्न चिह्न नहीं था। पर दूर-सुदूर बैंगलोर में बैठे वे इस पद के साथ न्याय कर पायेंगे, ऐसा संशय जरूर था।

मैं आज जब बीते इस एक वर्ष पर नजर डालता हूँ तो पाता हूँ कि श्री कुशलजी हमारी कसौटी पर पूर्ण रुप से खरे उतरे। उन्होंने अपने उत्तरदायित्व को न केवल बखूबी निभाया अपितु अपने कद से भी लाख गुना अधिक उँचाईयाँ देने हेतु अपने प्राणों को समर्पित कर दिया। अपने व्यापार आदि सारे कार्यों को पूर्ण रूप से गौण कर अवन्ति तीर्थ की प्रतिष्ठा के प्रति एकाकार हो गये। कुशलता के साथ किये गये प्रतिष्ठा के संचालन ने कुशलजी की तीव्र मेधा, निर्णय-शक्ति, कार्य-क्षमता को पूर्ण रूप से प्रकट कर दिया।

उन्होंने मंडप निर्माण से लेकर जूतों की व्यवस्था तक... हर कार्य का सूक्ष्मता से चिंतन किया। अपनी सोच को पूर्ण रूप से क्रियान्वयन करने की उनकी क्षमता निश्चित ही बेजोड़ दिखी।

भोजन और आवास व्यवस्था ने हर आने वाले व देखने वाले यात्री को अनुमोदना करने के लिये मजबूर कर दिया।

परमात्मा की आज्ञा के अनुरूप भोजन की व्यवस्था इतनी सुन्दर रही कि हजारों-हजारों लोग होने पर भी किसी को 10 मिनट के लिये भी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। भोजन, आवास व राजमहलनुमा बने पाण्डाल व्यवस्था की प्रशंसा हर व्यक्ति ने दिल खोल कर की।

जब कुशलजी बैंगलोर से निरन्तर आकर यहाँ के सारे कार्यों की समीक्षा कर रहे थे तो अवन्ति तीर्थ ट्रस्ट मंडल को पूरी तरह से जुटना ही था। ट्रस्ट मंडल ने तो कई महिनों से अपने सारे व्यापार आदि कार्य परमात्मा को समर्पित कर दिये थे। मारवाड़ी समाज पूर्ण अपनत्व भरे अधिकारों के साथ प्रतिष्ठा के हर कार्य में अपना योगदान दे रहा था। स्थानीय जिनेश्वर युवा परिषद् के सक्रिय पुरुषार्थ ने प्रतिष्ठा को चार चांद लगा दिये।

प्रतिष्ठा के एक दिन पूर्व आयोजित परमात्मा के दीक्षा कल्याणक एवं मुमुक्षु भाई बहिन के वर्षीदान के वरघोड़े का दृश्य आंखों से ओझल नहीं हो पा रहा है। शोभायात्रा का विराट् स्वरूप... हजारों हजारों की संख्या में चल रहे श्रद्धालु... अनुशासनबद्ध कतारें... विविध वाद्ययंत्र... युवा मंडल व महिला मंडलों की विविधता से परिपूर्ण भक्ति रचनाओं का दर्शन...!

बता रहे थे लोग कि वरघोड़ा चार से पाँच किलोमीटर लम्बा था। जैन समाज का ऐसा विराट् वरघोड़ा सुदीर्घ इतिहास का अनूठा हस्ताक्षर था।

यहाँ का सारा अन्य समाज इस प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 'जैनों का महाकुंभ' शब्द का श्रद्धा-भरा उपयोग कर

रहा था। इस प्रतिष्ठा की प्रशंसा पूरे भारत में हुई।

प्रतिष्ठा के दिन संपन्न हुई दो मुमुक्षुओं- मुमुक्षु शुभम् लूंकड व मुमुक्षु अंशु देशलहरा के दीक्षा समारोह ने प्रतिष्ठा को नई ऊँचाईयाँ प्रदान की।

मुझे याद है वह दिन जब जाजम मुहूर्त्त के लिये प्रवेश हुआ था। उस दिन गाय का शुभ शकुन हुआ था।

प्रतिष्ठा महोत्सव प्रारंभ के प्रथम दिन नगर उद्घाटन हेतु चली शोभायात्रा में मंगल कलश का शकुन हुआ था।

प्रतिष्ठा के दिन तो जैसे शकुनों की भरमार थी। स्वत: हुए ये शकुन प्रतिष्ठा महोत्सव की निर्विघ्नता व प्रभावकता का संदेश दे रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे सब कुछ परमात्मा अवन्ति पार्श्वनाथ प्रभु की अन्त: दिव्य स्फुरणा का ही परिणाम है, जो इतनी दिव्यता व भव्यता के साथ कलकल बहती सलिला की भांति पूर्ण सहजता के साथ संपन्नता को प्राप्त हो रहा है।

इस अविस्मरणीय प्रतिष्ठा की गौरवगाथा जितनी करो, अल्प प्रतीत होती है।

शिखर से नीचे की ओर जाने के लिये सीढ़ियाँ उतर रहा था कि तभी तीव्र ध्वनि के कारण ऊपर देखा। पुष्पक विमान पुष्प वर्षा कर रहा था। गुलाब की पंखुडियाँ बिखर रही थी। सुगन्ध फैल रही थी। नृत्य हो रहा था। गुलाल उड़ रही थी। लग रहा था जैसे पूरी प्रकृति परमात्मा की प्रतिष्ठा से चहक उठी हो और मैं इस महिमामंडित तीर्थ के जीर्णोद्धार व प्रतिष्ठा में पूर्ण रूप से जुड़ने के सौभाग्य का स्मरण कर मैं परमात्मा के प्रति कृतकृत्यता और परम धन्यता का अनुभव करने लगा।

प्रेरक कथा

कहानी

प्रस्तुति : कैलाश बी. संखलेचा

पुराने समय में एक राजा को अपने महामंत्री के ज्ञान और योग्यता पर पूरा भरोसा था। इसलिए राजा उनकी हर बात मानते थे। प्रजा में भी महामंत्री काफी प्रसिद्ध थे। एक दिन महामंत्री के मन में सवाल उठा कि राजा और दूसरे लोग जो मेरा सम्मान करते हैं, उसका कारण क्या है?मंत्री ने अपने इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए एक योजना बनाई।

अगले दिन महामंत्री ने दरबार से लौटते समय राजा के कोषागार से एक स्वर्ण मुद्रा चुपचाप ले ली, जिसे कोषागार के अधिकारी ने देखकर भी नजर अंदाज कर दिया।

मंत्री ने दूसरे दिन भी दरबार से लौटते समय दो स्वर्ण मुद्राएं उठा लीं। कोष अधिकारी ने देखकर सोचा कि शायद किसी खास वजह से वे ऐसा कर रहे हैं, बाद में अवश्य बता देंगे।

तीसरे दिन महामंत्री ने मुट्ठी में स्वर्ण मुद्राएं भर लीं। इस बार कोष अधिकारी ने उन्हें पकड़कर सैनिकों के हवाले कर दिया। मामला राजा तक पहुंचा।

न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठे राजा ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा कि महामंत्री द्वारा तीन बार राजकोष का धन चुराया गया है। इस अपराध के लिए उन्हें तीन माह की कैद दी जाए, ताकि वह फिर कभी ऐसा अपराध न कर सकें।

राजा के निर्णय से महामंत्री को अपने सवाल का जवाब मिल चुका था। उन्होंने राजा से निवेदन किया– 'राजन मैं चोर नहीं हूँ। मैं ये जानना चाहता था कि आपके द्वारा मुझे जो सम्मान दिया जाता है, उसका सही अधिकारी कौन है?मुझे मेरे सवाल का जवाब मिल गया है। मेरी योग्यता, ज्ञान या मेरा सदाचरण ही सम्मान के अधिकारी हैं। आज सभी लोग समझ गए हैं कि सदाचरण यानी अच्छा आचरण छोड़ते ही मैं दंड का अधिकारी बन गया हूँ। सदाचरण और नैतिकता ही मेरे सम्मान का मूल कारण थी।'

कथा की सीख : इस कथा की सीख यही है कि जिन लोगों का आचरण सही है, उन लोगों को समाज में सम्मान मिलता है। आचरण बुरा हो तो व्यक्ति सजा का पात्र बन जाता है।

उज्जैन तीर्थ में दीक्षा का अद्‌भुत वातावरण

उज्जैन 18 फरवरी। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में ता. 18 फरवरी 2019 को श्री अवन्ति तीर्थ की प्रतिष्ठा के तुरन्त पश्चात् वाराणसी नगर के रूप में बने भव्यातिभव्य राजमहल स्वरूप विशाल पाण्डाल में जोधपुर निवासी श्री मोतीलालजी सौ. उमादेवी लूंकड के सुपुत्र 21 वर्षीय शुभम्कुमार लूंकड एवं नारायणपुर निवासी श्री युधिष्ठिरजी सौ. कल्पना देशलहरा की सुपुत्री 22 वर्षीया अंशुकुमारी देशलहरा की भागवती दीक्षा अत्यन्त आनंद, उल्लास व परम भावुक वातावरण में संपन्न हुई।

दीक्षा समारोह का प्रारंभ पूज्यश्री के मंगलाचरण के साथ हुआ। दोनों मुमुक्षुओं ने खचाखच भरे पाण्डाल में जब प्रवेश किया तो पूरा वातावरण 'दीक्षार्थी अमर रहो' के गगनभेदी नारों से गूंजने लगा। दोनों मुमुक्षुओं के चेहरे आज संयम-प्राप्ति के पल में जोरदार दमक रहे थे। वे जयणा का पालन करते हुए धीरे-धीरे मंचासीन हुए।

दोनों मुमुक्षुओं ने वर्षीदान देकर अपने आपको पूर्ण अपरिग्रही घोषित किया। उसके बाद अपनी अंजली में चावल भरकर परमात्मा को बधाने के बाद गुरुदेवश्री के सिर पर वृष्टि करते हुए अहोभाव से बधाया। सकल श्रीसंघ को चावलों से बधाकर उनकी शुभकामनाऐं व शुभाशीष प्राप्त की।

दीक्षा की मंगल विधि के प्रारंभ में दोनों ही मुमुक्षुओं के परिवार जनों ने चतुर्विध श्री संघ की साक्षी से दोनों को दीक्षा ग्रहण करने की आज्ञा प्रदान की। गुरुदेव से प्रार्थना की कि वे हमारे पुत्र/पुत्री को दीक्षित करें।

उन्होंने भरे गले से कहा- हमने इनकी बहुत परीक्षा ली। दीक्षा न लेने के लिये समझाया। पर इनकी दृढ़ता के कारण आज हम सहर्ष आज्ञा प्रदान कर रहे हैं।

परमात्मा के प्रति अपनी कृतज्ञता अर्पण करते हुए तीन प्रदक्षिणा देकर विधि-विधान प्रारंभ किया। देववंदन आदि विधान करने के पश्चात् सकल श्रीसंघ की साक्षी से पूज्य गुरुदेवश्री ने उसे रजोहरण रूप संयम वेश प्रदान करने की प्रक्रिया प्रारंभ की।

संयम ग्रहण से पूर्व दोनों मुमुक्षुओं ने अपने माता-पिता, परिवार जन, व संघ के आगेवानों के चरण स्पर्श कर उनसे आशीर्वाद लिया। माता-पिता परिवार जनों ने रुदन करते हुए आशीर्वाद दिया। इस भावात्मक दृश्य को देख कर सारी जनता भावुक हो उठी और उनकी आंखों से आंसु बहने लगे।

पूज्यश्री ने सभी के समक्ष संयम वेश देने से पूर्व तीन बार उनकी इच्छा व दृढ़ता के बारे में पूछा। जब उन्होंने सभी के समक्ष दीक्षा ग्रहण करने की अपनी तीव्र अभीप्सा व्यक्त की तब पूज्यश्री ने दोनों मुमुक्षुओं को अभिमंत्रित रजोहरण प्रदान करते हुए संयम वेश प्रदान किया।

रजोहरण प्राप्त कर मुमुक्षुओं के चेहरे खिल उठे। प्रसन्नता छलक पडी। पाँवों में थिरकन छा गई। दोनों नाचने लगे। आज सपना साकार हुआ। मनोरथ फलीभूत हुआ। जीवन को लक्ष्य मिला। नाव को मांझी मिला।

संयम वेश धारण कर जब उन्होंने सभा मंडप में प्रवेश किया तो लोगों ने जय-जयकार के नादों के साथ वंदन किया। केशलुंचन, आजीवन संयम प्रत्याख्यान आदि विधि-विधान के पश्चात् उन्हें नये नाम प्रदान किये। मुमुक्षु शुभम्कुमार लूंकड़ का नाम मुनि मयूखप्रभसागर रखा गया। वे पूज्य आचार्यश्री के शिष्य घोषित किये गये। मुमुक्षु अंशुकुमारी देशलहरा का नाम साध्वी आगमरुचिश्रीजी रखा गया। उन्हें पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या घोषित किया गया।

लगभग सात घंटे तक चले इस समारोह में हजारों-हजारों लोगों की पूरे समय उपस्थिति रही। सभी लोग कह रहे थे, ऐसा समारोह हमने अपनी जिन्दगी में पहली बार देखा है।

संयम ग्रहण से पूर्व मुमुक्षु शुभम्कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा- मुझ पर पूजनीया गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. का परम उपकार है। अपने माता-पिता के उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए जाने अनजाने हुई भूलों के लिये क्षमायाचना की।

मुमुक्षु अंशुकुमारी ने पूजनीया गुरुवर्याश्री, अपने माता-पिता, दादा-दादी आदि के उपकारों का वर्णन किया। एवं गलतियों के लिये क्षमायाचना की।

मुमुक्षु शुभम लूंकड का
विजय तिलक महोत्सव
18 फरवरी 2019

मुमुक्षु सुश्री अंशु देशलहरा प्रव्रज्या महोत्सव
श्री अवन्ति तीर्थ उज्जैन 18 फरवरी 2019

पूज्य गच्छाधिपतिश्री द्वारा
दीक्षा कल्याणक विधान

संगीत सुरावली का संगम

राजदरबार श्री अश्वसेन महाराजा का

पूज्य गच्छाधिपतिश्री से आशीर्वाद
लेते माता-पिता, इन्द्र-इन्द्राणी

द्वारोद्घाटन सुराणा परिवार द्वारा

यतिवर्य श्री वसंतविजयजी
का उद्बोधन

वरघोडे में
राजषाही ठाट

श्री अश्वसेन महाराजा का उद्बोधन

संयोजक श्री
कुशालजी गुलेच्छा का अभिनंदन

हेलिकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा

शिष्य परिवार व श्रीसंघ सहित
गच्छाधिपतिश्री वरघोडे में

श्री अवन्ति तीर्थ प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री अवन्ति तीर्थ मुख्य द्वार अर्पण सकलेचा परिवार द्वारा

अवन्ति नगर उद्घाटन कोठारी परिवार द्वारा

वाराणसी नगर उद्घाटन रांका परिवार द्वारा

गौतम शालिभद्र नगर उद्घाटन गुलेच्छा परिवार द्वारा

श्री अवन्ति तीर्थ प्रतिष्ठा समारोह
निश्रादाता पू. गच्छाधिपतिश्री एवं साधु-साध्वी वृंद

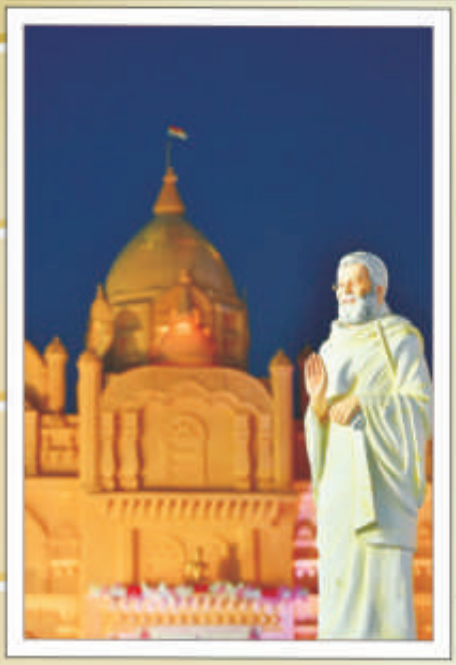

श्री अवन्ति तीर्थ प्रतिष्ठा के उल्लासित क्षण की अमिट स्मृति

मुमुक्षु विजय कोचर

का

संयम स्वीकृति उत्सव

दीक्षा 10 मई 2019
नंदुरबार (महाराष्ट्र)

निवेदक -
श्रीमती प्रमिलाबाई गिरधारीलालजी
कोचर परिवार,
लोहावट-नंदुरबार

मुमुक्षु विजय कोचर की दीक्षा 10 मई को

उज्जैन 16 फरवरी। नंदुरबार निवासी पिता श्री गिरधारीलालजी माता श्रीमती प्रमिलादेवी कोचर के सुपुत्र विजयकुमार कोचर की भागवती दीक्षा नंदुरबार नगर में वैशाख सुदि 6 ता. 10 मई 2019 को पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

मुमुक्षु विजय कोचर पिछले 5 वर्षो से दीक्षा की शिक्षा प्राप्त कर रहा है। पूज्य आचार्यश्री के नंदुरबार चातुर्मास के समय उपधान तप की तपस्या में उसे प्रेरणा मिली। अपनी बडी बहिन सुश्री रिंकी कोचर से उस प्रेरणा को विशेष बल मिला। पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से उसके हृदय में पैदा हुए संयम ग्रहण करने के विचारों को परिपक्वता मिली। पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म., पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म., पू.गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., पू. विमलप्रभाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल से समय-समय पर उसे संयम की प्रेरणा प्राप्त होती रही।

ता. 16 फरवरी 2019 को कोचर परिवार ने पूज्यश्री की सेवा में उपस्थित होकर पूज्यश्री को आज्ञा पत्र प्रदान किया। और मुमुक्षु विजय कोचर की दीक्षा कराने हेतु मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया।

पूज्यश्री ने उनके निवेदन को स्वीकार करते हुए ता. 10 मई 2019 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। जिसे श्रवण कर मुमुक्षु हर्षोल्लास से भर कर नृत्य करने लगा। यह दीक्षा महोत्सव नंदुरबार में होगा।

मुमुक्षु विजय कोचर का अभिनंदन

बंगलूरु फरवरी। श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुड़ी के तत्वावधान में जिनकुशलसूरि जैन आराधना भवन में नंदुरबार के मुमुक्षु विजयकुमार कोचर का बहुमान किया गया। उनकी भागवती दीक्षा आगामी 10 मई को नंदुरबार में होगी।

इस अवसर पर श्री अरविन्द कोठारी ने संयम पथ पर आरूढ़ होने जा रहे ऐसे पथिक के विरति भावों की अनुमोदना की। ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमार रांका ने तिलक, श्री निर्भयलाल गुलेच्छा ने माला, श्री तेजराज मालानी ने शाल द्वारा दीक्षार्थी का बहुमान किया। इसी के साथ जिनदत्त-कुशलसूरि जैन सेवा मंडल एवं अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बंगलूरु शाखा द्वारा भी मुमुक्षु का अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर रणजीत ललवानी, पारसमल पगारिया, लाभचन्द मेहता, गजेन्द्र संकलेचा, कैलाश संकलेचा, ललित रांका, ललित डाकलिया, गौतम कोठारी, विकास खटोड़ के साथ सामायिक मंडल, महिला परिषद्, महिला सेवा मंडल के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

गोत्र का इतिहास
13

बोरड़/बुरड़/बरड़ गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

विक्रम की बारहवीं शताब्दी की यह घटना है। इस घटना का संबंध अम्बागढ के परमार राजा राव बोरडस ेह ै।भ ाावुकप्र्कृतिक ाव ह राजा शिवजी का परम भक्त था। जो भी साधु संन्यासी मिलते, वह सभी से एक ही प्रार्थना करता कि मुझे आप भगवान शिव के प्रत्यक्ष दर्शन करा दीजिये। ताकि मैं उनसे यह जान सकूं कि मेरा मोक्ष कब होगा! इस शर्त को स्वीकार करने वाला कोई संन्यासी, बाबा, जोगी, फकीर उसे नहीं मिला।

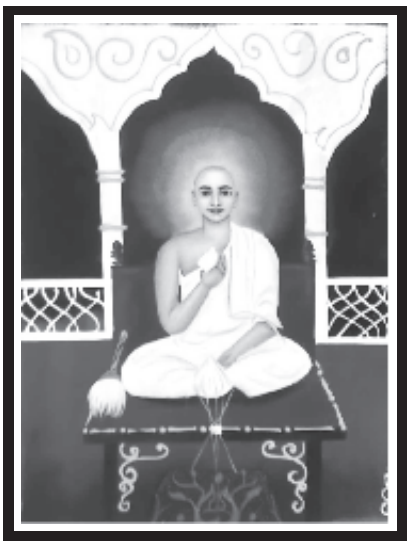

प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज वि. सं. 1175 में विहार करते हुए अम्बागढ़ पधारे। राजा राव बोरड गुरुदेव के दर्शन पाकर बहुत प्रभावित हुआ। उनके तेजस्वी मुखमंडल को देखकर राजा को प्रतीत हुआ कि ये कोई बहुत बडे महापुरुष प्रतीत होते हैं। ये मेरी इच्छा पूरी करेंगे।

वह राजा विनयपूर्वक गुरुदेव के चरणों में पहुँचा और उसने गुरुदेव से विनयपूर्वक प्रार्थना की कि वे उसकी मनोकामना पूर्ण करने के लिये भगवान शिव के दर्शन करा देवें।

दादा गुरुदेव ने अपने ज्ञान से सब जानकर कहा– हे राजन्! शिवजी के दर्शन करा दूंगा, पर मेरी एक शर्त है!

राजा बोला– आपकी हर शर्त मुझे मंजूर है।

गुरुदेव ने फरमाया– मेरी शर्त मात्र इतनी है कि शिव जो कहें, जैसा कहें, वह सब तुम्हें स्वीकार करना होगा।

पल दो पल विचार कर राजा बोला– आपकी हर शर्त मुझे मंजूर है। भगवान् शिव जो भी, जैसा भी आदेश देंगे, मैं सहर्ष स्वीकार करुँगा।

दादा गुरुदेव उस राजा को शिव की एक पिण्डी के पास ले गये और कहा– इस पिंडी पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करो। एकाग्र दृष्टि से देखो। पूर्ण एकाग्रता के साथ देखो।

राजा राव बोरड ने वैसा ही किया। शिवलिंग में से शिवजी प्रकट हुए। आशीर्वाद प्रदान किया। राजा राव बोरड ने मोक्ष की अभीप्सा शिव के सामने रखी।

शिव ने कहा– तुम्हें मुक्ति तो गुरु भगवंत ही दिला सकते हैं। उनके वचनों पर चलना होगा। यह कहते हुए अंगुली का इशारा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की ओर किया।

वह सारी बात समझ कर दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की शरण जा पहुँचा। अपने इष्ट भगवान शिव के दर्शन कर वह धन्य हो गया था। वह तुरंत शिव के वचनानुसार दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की सेवा में पहुँचा। उनसे मोक्ष का मार्ग पूछा। गुरुदेव ने उसे सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र रूप धर्म की महिमा समझाई। तत्त्व का रहस्य समझकर वह परम आर्हत् श्रावक बन गया। उसने सपरिवार जैन धर्म को अंगीकार कर लिया। गुरुदेव ने राजा के नाम को ही गोत्र में परिवर्तित कर उन्हें बोरड गोत्र प्रदान किया। उच्चारण में कहीं-कहीं इसे बुरड, बरड आदि से भी संबोधित किया जाता है।

एक इतिहास रचा गया

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह संपन्न

उज्जैन 18 फरवरी। परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के पावन मार्गदर्शन व निश्रा में श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ की अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ ता. 18 फरवरी 2019 को संपन्न हुआ। पूज्यश्री के साथ उनका शिष्य मंडल पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. का सानिध्य प्राप्त हुआ।

महोत्सव का प्रारंभ ता. 13 फरवरी को पूज्य गुरु भगवंतों के मंगल प्रवेश के साथ हुआ। श्री अवंति तीर्थ मुख्य प्रवेश द्वार, कार्यालय, प्रतिष्ठा के लिये बने श्री अवंति नगर, केसर घर, प्याऊ के उद्घाटन के पश्चात् वाराणसी नगर एवं श्री गौतम शालिभद्र नगर का उद्घाटन किया गया। संपूर्ण महोत्सव स्थल का नाम श्री सिद्धसेन दिवाकर नगर रखा गया था, इसका उद्घाटन उज्जैन नगर के महापौर द्वारा किया गया।

ता. 14 फरवरी से पंचकल्याणक महोत्सव का प्रारंभ हुआ। 14 को च्यवन कल्याणक, 15 को जन्म कल्याणक, 16 को जन्म बधाई, नामस्थापना, पाठशाला गमन, मामेरा विवाह, राज्याभिषेक, नवलोकान्तिक देवों का आगमन व प्रार्थना आदि कार्यक्रम आयोजित हुए।

ता. 17 फरवरी को भव्यातिभव्य वरघोडे का आयोजन हुआ। उज्जैन के इतिहास में ऐसा वरघोडा आज तक नहीं निकला था। लगभग 35 से 40 हजार श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। विविध मंडलियॉ, बैंड आदि का अद्भुत आकर्षण था। वरघोडे के पश्चात् परमात्मा का दीक्षा कल्याणक मनाया गया। रात्रि में अंजनविधान संपन्न हुआ। ता. 18 को प्रातः शुभ मुहूर्त्त में प्रतिष्ठा संपन्न हुई। प्रतिष्ठा के समय भक्ति भाव का अद्भुत वातावरण बना। ता. 19 फरवरी को द्वारोद्घाटन के साथ सतरह भेदी पूजा व दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव में सम्मिलित होने के लिये पूज्य आचार्य श्री हेमचन्द्रसागरसूरिजी म. पू. आचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरिजी म. आदि ठाणा उग्र विहार कर पधारे।

इस अवसर पर पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. आदि ठाणा का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव में श्री कृष्णगिरि शक्तिपीठ के पीठाधिपति यति प्रवर डॉ. श्री वसंतविजयजी म. का भी पदार्पण हुआ।

प्रतिष्ठा समारोह को सफल बनाने के लिये प्रतिष्ठा महोत्सव समिति का गठन किया गया था। जिसके अध्यक्ष श्री

पारसजी जैन विधायक को, उपाध्यक्ष श्री पुखराजजी चौपडा, उज्जैन को बनाया गया। संयोजक का विशिष्ट उत्तरदायित्व संघवी श्री कुशलराजजी गुलेच्छा, बैंगलोर को सौंपा गया।

संयोजक बैंगलोर निवासी संघवी श्री कुशलराजजी गुलेच्छा पिछले एक वर्ष से इस प्रतिष्ठा महोत्सव को विशेष ऊँचाई प्रदान करने के लिये पूर्ण रूप से जुटे हुए थे। वे सैंकडों बार उज्जैन पहुँचे और सारी व्यवस्थाओं का सूक्ष्म अवलोकन करते हुए उन्हें क्रियान्वित किया।

संगीतकार के रूप में श्री नरेन्द्रजी वाणीगोता पधारे थे। जबकि विधि विधान का दायित्व पंडितवर्य श्री अश्विन भाई बैंगलोर ने करवाया। यह प्रतिष्ठा महोत्सव पूरे भारत में चर्चित रहा। इसकी व्यवस्थाओं की प्रशंसा सर्वत्र रही। श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट मंडल, जिनेश्वर युवा परिषद् का इस प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाने में विशेष पुरुषार्थ रहा।प्रतिष्ठा महोत्सव में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की केन्द्रीय समिति एवं देश भर में फैली शाखाओं के 250 से अधिक युवाओं का व्यवस्था में पूरा-पूरा सहयोग रहा।

पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. की प्रेरणा से प्रतिष्ठा निर्विघ्न महोत्सव हेतु 43 लोगों ने लगातार सात महिनों तक आयंबिल तप किया।

दो बडी दीक्षा संपन्न

उज्जैन 18 फरवरी। श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में ता. 18 फरवरी 2019 को पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री प्रियकृपांजनाश्रीजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री मेरुशीलाश्रीजी म. की बडी दीक्षा सानन्द संपन्न हुई। पूजनीया साध्वी श्री प्रियकृपांजनाश्रीजी म. की दीक्षा कम्पली में ता. 30 अप्रेल 2018 को हुई थी। पूजनीया साध्वी श्री मेरुशीलाश्रीजी म. की दीक्षा इन्दौर में ता. 25 जनवरी 2019 को संपन्न हुई थी। दोनों को बडी दीक्षा प्रदान करते हुए पूज्यश्री ने पंचमहाव्रत धारण करवाये। इस अवसर पर प्रासंगिक प्रवचन फरमाते हुए पूज्यश्री ने छोटी व बडी दीक्षा का विवेचन किया।

बोली का कीर्त्तिमान बना

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा महोत्सव में परमात्मा के मुख्य शिखर पर अमर ध्वजा चढाने की बोली का अद्‌भुत कीर्तिमान बना। इतनी बडी बोली मालव प्रदेश में पहली बार हुई है। बोली का लाभ प्रतिष्ठा महोत्सव के संयोजक मूल मोकलसर वर्तमान में बैंगलोर निवासी संघवी श्री सुमेरमलजी तेजराजजी कुशलराजजी उत्तमचंदजी ललितकुमारजी गुलेच्छा परिवार ने लिया।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर की अमर ध्वजा का लाभ श्री हीरालालजी गणेशमलजी राठोर परिवार कोल्हापुर-पेठ-बडगांव ने लिया। आदिनाथ मंदिर की अमर ध्वजा का लाभ बाडमेर-चौहटन-सूरत निवासी श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू परिवार ने लिया।

मुख्य शिखर पर मुख्य स्वर्ण कलश का लाभ गढसिवाना अहमदाबाद निवासी संघवी वंसराजजी बाबुलालजी सुरेशकुमारजी अशोककुमारजी भंसाली परिवार ने लिया। चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर पर स्वर्ण कलश का लाभ श्रीमती गजीदेवी भगवानदासजी बोथरा परिवार बाडमेर-बिशाला-अहमदाबाद वालों ने लिया। श्री आदिनाथ मंदिर पर स्वर्णकलश का लाभ श्री नेमीचंदजी विरदीचंदजी भंवरलालजी सुआदेवी छाजेड परिवार हरसाणी-बाडमेर-मुंबई वालों ने लिया।

मूल गर्भगृह में श्री आदिनाथ प्रभु को बिराजमान का लाभ संघवी श्रीमती शांतिदेवी पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा परिवार मोकलसर-बैंगलोर वालों ने तथा श्री गोडी पार्श्वनाथ प्रभु को बिराजमान का लाभ मांडवला निवासी संघवी मातुश्री पानीदेवी मोहनलालजी मुथा परिवार एम.एम. एक्सपोर्ट चेन्नई वालों ने लिया।

रंगमंडप पर स्वर्णकलश का लाभ अहमदाबाद निवासी श्रीमती गोदावरी देवी व्यापारीलालजी बोहरा परिवार हाला वालों ने लिया। द्वारोद्‌घाटन का लाभ उज्जैन निवासी श्री हरकचंदजी बसंतकुमारजी सुराणा परिवार ने लिया।

बूढ़ा दर्शन : सपना साकार हुआ

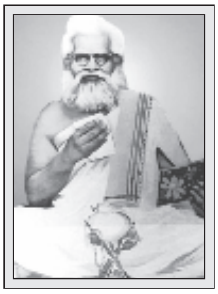

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म., पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. ठाणा 2 एवं पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म., पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 4 उज्जैन से नागेश्वर होते हुए बूढा नगर की ओर विहार किया।

पूजनीया महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. के अन्तर की एक ही अभिलाषा थी कि पूज्य आचार्य प्रवर कविकुल किरीट श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी म. के समाधि मंदिर के दर्शन करना! इस अभिलाषा को साकार करने के लिये वे बूढा नगर में पहुँचे। बूढा नगर में सन् 1962 में आचार्य श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी म. का स्वर्गवास हो गया था। वहाँ समाधि मंदिर निर्मित हुआ है।

समाधि स्थल के दर्शन कर धन्यता का अनुभव किया। प्रवचन में पूजनीया महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. ने फरमाया- मुझे चारित्र प्रदान करने वाले गुरुदेव की समाधि के दर्शन कर आज मेरा जीवन धन्य हो गया है। पूज्य आचार्यश्री की यह अनुपम कृपा का ही परिणाम है कि दर्शन का हमारा सपना साकार हुआ है।

आज पूर्णिमा का पावन पर्व है। 65 वर्ष पूर्व आज ही के दिन पूज्य कविसम्राट् आचार्य प्रवर श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी के कर-कमलों से मेरी बड़ी दीक्षा संपन्न हुई थी। आज मिगसर सुदि पूनम के दिन गुरुदेव की समाधि के दर्शन कर परम धन्यता का अनुभव हो रहा है।

पूज्य विहरमान गच्छाधिपतिश्री ने समाधि मंदिर के दर्शन अवसर पर एक गीतिका के माध्यम से अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त की-

गुरुभक्ति गीत

(तर्ज- हृदय बिराजो पास सांवलिया..)

नमो नमः जिनकवीन्द्रसूरि ।।टेर।।
पालनपुर से शुरु हुई यात्रा, बूढा पुर में हुई थी पूरी ।।1।।
कवि सम्राट् विराट कहाते, कविता में टीका अवचूरी ।।2।।
आगमज्ञानी आतमध्यानी, गण शासन के थे तुम धुरी ।।3।।
देवलोक में आप बिराजो, कर किरपा सब मेटो दूरी ।।4।।
आज समाधि दर्शन पाकर, छाया उर आनंद बहुरी ।।5।।
दोय पिचत्तर पूनम मिगसर, धन्य दिवस धन घडी पल नूरी ।।6।।
दिव्य मयंक ज्योति युत आये, मणिप्रभ करता वंदन भूरि ।।7।।

शिखरजी तीर्थ में प्रतिष्ठा संपन्न

श्री सम्मेतशिखर तीर्थ में श्री सांवलिया पार्श्वनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 3 मार्च 2019 को आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुई।

प्राचीन इस मंदिर का जीर्णोद्धार पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म. के मार्गदर्शन में पू. प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से संपन्न हुआ है। यह प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री विजयराजशेखरसूरिजी म., पूज्य आचार्य श्री विनयसागरसूरिजी म., पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म. आदि आचार्यों भगवंतों की पावन निश्रा में संपन्न हुआ।

पूज्य आचार्यश्री का चातुर्मास धूलिया नगर में

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का चातुर्मास महाराष्ट्र के धूले नगर में होगा।

धूले श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी नाहर ने श्रीसंघ की ओर से पूज्यश्री से चातुर्मास करने की भावभरी विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने ता. 18 फरवरी को उज्जैन अवन्ति तीर्थ प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर यह घोषणा की। घोषणा करते ही सकल श्री संघ में परम आनंद की लहर छा गई।

सूरत में प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

सूरत 10 फरवरी। सूरत के कुशल दर्शन सोसायटी स्थित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा सकल श्रीसंघ के उल्लास उमंग सहित संपन्न हुई। दिनांक 10 फरवरी 2019 बसंत पंचमी रविवार के पावन दिन मूलनायक परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी, शंखेश्वर पार्श्वनाथ, महावीरस्वामी, गौतमस्वामी, सुधर्मास्वामी, मूलनायक दादा श्री जिनकुशलसूरिजी, युगप्रधान प्रथम दादा जिनदत्तसूरिजी, द्वितीय दादा मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी, चतुर्थ दादा श्री जिनचन्द्रसूरिजी, श्री जिनेश्वरसूरिजी गुरुदेव, नाकोड़ा भैरुजी, पद्मावती माता, महालक्ष्मी माता, सरस्वती माता की प्रतिमाओं का अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव पू. उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म., पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. की निश्रा में संपन्न हुआ।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव में पू. आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म. सा. की सुशिष्या एवं पू. संघरत्ना प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रावर्तिनी कुशल दर्शन सोसायटी जिनमंदिर प्रेरिका पू. साध्वी सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. गच्छगणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की सुशिष्या पू. साध्वी प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा का सानिध्य प्राप्त हुआ।

पालीताना में दीक्षा 30 मई को

उज्जैन 18 फरवरी। मूल गढ़ सिवाना वर्तमान में हैदराबाद (फिलखाना) निवासी श्रीमती गवरी देवी मांगीलालजी छाजेड की पौत्री व श्री कांतीलालजी मांगीलालजी छाजेड की सुपुत्री कुमारी मनीषा छाजेड़ की भागवती दीक्षा श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पावन भूमि पर ज्येष्ठ वदि एकादशी, गुरुवार दिनांक 30 मई 2019 को संपन्न होगी। इस प्रकार की घोषणा परिवार द्वारा विनंती करने पर उज्जैन अवंती तीर्थ प्रतिष्ठा एवं दीक्षा महोत्सव के अवसर पर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा की गई।

मुमुक्षु मनीषा छाजेड़ विगत लंबे समय से प्रवत्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पूज्या साध्वी श्रद्धान्विताश्रीजी म. के पास अध्ययनरता है। उसकी भागवती दीक्षा पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी मुनि मनीषप्रभसागरजी म. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

आगरा में जीर्णोद्धारित दादावाड़ी की प्रतिष्ठा संपन्न

आगरा 27 जनवरी। आगरा में लगभग 450 वर्ष प्राचीन दादावाड़ी है। आगरा में ही चौथे दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरिजी म. के दो चातुर्मास भी हुए। विख्यात गुरुभक्त श्री हीरानन्द मुकीम ने स्तूप निर्माण कराकर जंगम युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी की निश्रा में दादा श्री जिनदत्तसूरिजी के चरण स्थापित कराये। समय के फेर से यहाँ चरण नहीं रहे। यह स्तुप वर्तमान में जीर्णरूप में विद्यमान है।

लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व श्री भावसिंहजी नाहटा ने गुम्बद निर्माण कराकर दादा श्री जिनकुशलसूरिजी के चरण जेठ सुदि पूनम वि.सं. 1778 में प्रतिष्ठित कराये थे। जीर्ण होने पर इसका उद्धार एवं विशाल सभामण्डप वि.सं. 2025 में गच्छनायक आचार्य श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी की आज्ञावर्तिनी पू. साध्वीजी चन्द्रश्रीजी धरणेन्द्रश्रीजी दिव्यश्रीजी के सानिध्य में परम गुरुभक्त श्री जवाहरलालजी लोढा ने देशभर के गुरु भक्तों के आर्थिक सहयोग से कराया था।

गत दो वर्षों से दादा श्री जिनकुशलसूरिजी गुरुमन्दिर का भव्यरूप में जीर्णोद्धार पू. सज्जनमणि प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में पूर्ण होकर वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. की आज्ञावर्तिनी प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ठाणा की निश्रा में दादा श्री जिनकुशलसूरिजी की नूतन मूर्ति तथा प्राचीन चरणों की प्रतिष्ठा माघ वदी सातम वि.सं. 2075 दि. 27.1.2019 को पंच दिवसीय महोत्सवसहित उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई।

नूतन मूर्ति भराने एवं प्रतिष्ठा एवं ध्वजा तथा बड़ी नवकारसी का लाभ फलोदी वाले श्री रेखचंदजी नेमीचंदजी अमरचंदजी लोकड़ परिवार के श्री रतनचंदजी रविकुमारजी मोहितकुमारजी वर्तमान आगरा निवासी ने लिया। निर्माण में देश के कई ट्रस्ट, दादावाडी एवं बाहर तथा आगरा के गुरुभक्तों ने लाभ लिया।

दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी की नवीन वेदी का लाभ पिता श्री जवाहरलालजी लोढा माताजी श्रीमती केशरकुमारीजी, भाई वीरेन्द्रसिंहजी, नरेन्द्रसिंहजी की स्मृति में सुरेन्द्रसिंह, देवेन्द्रसिंह, बृजेन्द्रसिंह, प्रवीणकुमार, आनन्दसिंह लोढा परिवार ने लिया।

-सुरेन्द्रसिंह लोढा, आगरा

Open Book Exam का परिणाम घोषित

परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के शिष्यरत्न विपुल साहित्य सर्जक मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा ''साधना का ऐश्वर्य, चेतना का माधुर्य'' Open Book Exam का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत 300 प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इनमें से 5 प्रतिभागी जिनमें प्रथम स्थान-भारती बोथरा-जीयांगज, द्वितीय स्थान-रेखा वडेरा-अहमदाबाद, तृतीय स्थान-प्रमिला पोखरणा-धूले, चतुर्थ स्थान-विनीता बच्छावत-फलोदी और पंचम स्थान-गजेन्द्र चौपड़ा-बालोतरा ने प्राप्त किया जिन्हें आयोजक समिति श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, स्वर्णिम चातुर्मास 2018 व्यवस्था समिति-बाड़मेर द्वारा पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त समस्त प्रतियोगियों को प्रेरणा पुरस्कार स्वरूप पुस्तकें भेंट की गई।

प्रेषक-रजत सेठिया

कल्याणपुर में महोत्सव का ठाट

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. के शिष्य विपुल साहित्य सर्जक मुनिप्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. एवं पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. की पावनकारी निश्रा में कल्याणपुर नगर की धन्यधरा पर श्री शांतिनाथ भगवान जिनमंदिर की 35वीं वर्षगांठ एवं मातुश्री धापूदेवी बागरेचा के जीवित महोत्सव निमित्ते पंचाह्निका महोत्सव का भव्यातिभव्य कार्यक्रम 7-2-19 से 11 फरवरी को संपन्न हुआ।

दिनांक 7 फरवरी को पूज्य मुनिश्री का भव्य सामैया द्वारा नगर प्रवेश हुआ। तत्पश्चात् जीवन जीने की कला इस विषय पर प्रवचन संपन्न हुआ।

प्रवचन महिमा

प्रभावशाली शैली में संगीत संध्या, प्री-वेडींग, गृह प्रवेश, भोजन समारोह, में वेशभूषा आदि पर अत्यन्त सरल भाषा एवं तीक्ष्ण शैली में दो घण्टे प्रवचन की अमृत गंगा बही। इसी क्रम में महोपाध्याय समयसुन्दरजी महाराज द्वारा रचित सुप्रसिद्ध पद्मावती आलोयणा पर डेढ़ घण्टे तक अनराधार आत्मा को जगा दें, पाप से घृणा उत्पन्न हो जाये, ऐसी अद्‌भुत वाणी प्रवाहित हुई। इस भव के साथ-साथ पूर्व भवों में कृत पापों का मिच्छामि दुक्कड़ं करवाया गया। प्रवचनों का जैनेतर समाज ने भी लाभ उठाया।

प्रवचन में कल्याणपुर ग्राम के सरपंच साहब दोलारामजी कुआ, अराबा ग्राम के सरपंच नरपतसिंहजी राजपुरोहित, बालोतरा के पूर्व प्रधान नाहरसिंहजी राजपुरोहित, कल्याणपुर के उपप्रधान कर्णराजजी पटेल उपस्थित थे।

इस पंच दिवसीय कार्यक्रम के आयोजक श्रीमान हनुमानजी बागरेचा ने अपनी अभिव्यक्ति देते हुए गुरु चरणों में कृतज्ञता ज्ञापित की। समस्त पधारे हुए महानुभावों एवं कार्यकर्ताओं का अभिवादन किया गया। जैनश्री संघ के मंत्री लूणचंदजी बागरेचा, गौतमजी संचेती, अमृतजी बागरेचा, ग्राम सरपंच दोलारामजी, इन्द्राजी पारख तथा बाबूलालजी बागरेचा ने अपने भाव अभिव्यक्त किये। सभी लोग पूज्यश्री के प्रवचन से बहुत प्रभावित हुए। कुछ दिन और स्थिरता करने की विनंती की।

35 वर्षगांठ पर ध्वजारोहण

श्री शांतिनाथ जिनमंदिर की 35वीं वर्षगांठ के उल्लास ने प्रतिष्ठा के उन दिव्य पलों को पुनः दोहराया। इस मंदिर की पूर्व में प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिनजयसागरसूरि जी निश्रा में संपन्न हुई थी। उसके बाद मंदिर की जीर्णोद्धार हुआ और 35 वर्ष पूर्व प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म.सा. की निश्रा में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। उसी हर्षोल्लास के साथ 35वीं वर्षगांठ मनायी गयी। ऐसा अद्‌भुत माहौल बना कि जैसेप्र तिष्ठाक ाक र्यक्रमह ो।प्र तिदिनप ूजन-महापूजन आदि पढ़ाये गये।

दो पुस्तकों का विमोचन

विपुल साहित्य सर्जक मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.

सा. द्वारा लिखित जैन जीवन शैली का एवं जीव विचार प्रकरण का विमोचन हुआ जिसका लाभ क्रमशः लालचंदजी विनोदकुमारजी बागरेचा कल्याणपुर-अहमदाबाद तथा मुन्नीलालजी, बाबुलालजी कंकुगोत्रा बालवाडा चौन्नई ने लिया।

गौतमजी संचेती कल्याणपुर-सिंधनूर निवासी ने प्रत्येक घर में जहाज मंदिर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का किट भेंट दिया।

कल्याणपुर कार्यक्रम की झलकियाँ

इचलकरंजी में संयम रजत वर्ष अनुमोदना

इचलकरंजी 23 फरवरी। मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी संघ इचलकरंजी में दिनांक 23 फरवरी को पूज्य खरतरगच्छाधिपती आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी गणिनी पदविभूषिता श्री सुलोचनाश्रीजी म. की सुशिष्या विदुषी साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में साध्वी प्रियदिव्यांजना श्रीजी म. के संयम जीवन के 25 वर्ष पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में संयम रजत समारोह मनाया गया।

मणिधारी भवन में आयोजित अभिनंदना के कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष श्री संपतजी संकलेचा, केयुप के राष्ट्रीय महामंत्री रमेश लुंकड़, कविताजी ललवानी, सुरेशजी झाबक, आदि ने बधाई सह आगामी जीवन के लिए शुभकामनाएं प्रकट की। साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. एवं साध्वी प्रियशुभांजनाश्रीजी म. ने विविध गुणों की प्रशंसा करते हुए बधाई एवं शुभकामनाये देते हुए कहा कि जिस लक्ष्य से संयम जीवन अंगीकार किया है उस लक्ष्य प्राप्ति में उत्तरोत्तर प्रगति करते रहे।

दोपहर में वर्धमान शक्रस्तव महापूजन आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य लाभार्थी बनने का लाभ साध्वीजी के सांसारिक परिवार झाबक एवं निमाणी परिवार ने लिया।

प्रवचन में साध्वी श्री दिव्यांजनाश्रीजी लिखित 'विरति वैभव' पुस्तक का विमोचन परिवार जनों, संघ के आगेवानों, केयुप एवं केएमपी द्वारा किया गया। महापूजन के मध्य में 'संयम उपकरण वंदनावाली' रखी गयी। जिसमें विभिन्न नियमों से बोलियां लगाई गई। जिसमें बड़ी तादाद में लोगों की उपस्थिति रही।

साध्वी दिव्यांजनाश्रीजी म. के संयम जीवन 25 वर्ष, एवं साध्वी श्री प्रियशुभांजना श्रीजी म. के संयम जीवन के 16 वर्ष पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद (केयुप) इचलकरंजी शाखा द्वारा गरीबों को भोजन, कपड़े वितरण एवं अस्पताल में कंबल वितरण आदि अनुकंपा के कार्य किए गए। जिसकी सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंशा की। दिनांक 24 फरवरी को साध्वी प्रियशुभांजनाश्रीजी म. का 17 वां दीक्षा दिवस चारित्र वंदनावाली द्वारा मनाया गया।

-रमेश लुंकड़, इचलकरंजी

कैवल्यधाम में दो दीक्षा संपन्न

श्री कैवल्यधाम तीर्थ 10 फरवरी। तीर्थ की पावन धरा पर विचक्षण विद्यापीठ में पू. मुनिश्री महेन्द्रसागरजी म. सा. एवं पू. मुनिश्री मनीषसागरजी म. सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में पू. आर्याश्री मणिप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा, पू. आर्याश्री मनोरंजनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा, पू. आर्याश्री राजेशश्रीजी म. सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में दि. 10 फरवरी 2019 को दीक्षा महोत्सव संपन्न हुआ।

मुमुक्षु पीयूषजी गोलछा को पू. मुनिश्री प्रशमसागरजी म. सा. एवं मुमुक्षु श्री नवनीतजी बोथरा को पू. मुनिश्री वैभवसागरजी म. सा. इस प्रकार नामकरण किया गया।

इस अवसर पर जिनभक्ति महोत्सव के अंतर्गत वर्षीदान वरघोडा आदि समारोह आयोजित किए गए। अनेक श्रद्धालुओं ने उपस्थित रहकर संयम भावों की अनुमोदना की।

कुशल वाटिका, बाड़मेर में जयकारों के साथ हुआ ध्वजारोहण

अवन्ति तीर्थ ध्वजारोहण का अपूर्व दृश्य

श्री अवन्ति तीर्थ मुख्य रंगमंडप में पूजन का दृश्य

बाड़मेर 08 फरवरी। राष्ट्रीय राजमार्ग-68 बाड़मेर अहमदाबाद रोड पर स्थित कुशल वाटिका प्रांगण में परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमन्दिर, दादावाड़ी, नवग्रह मन्दिर, देवी-देव मन्दिर एवं गुरु मन्दिर की छठी वर्षगांठ दि. 8 फरवरी को सम्पन्न हुई।

पूज्या साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म. की स्मृति में बनी कुशल वाटिका के नौ मन्दिरों की छठी वर्षगांठ के अवसर पर पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के सुशिष्य बाड़मेर रत्न पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. व श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में प्रातः 8:00 बजे अठारह अभिषेक, प्रातः 9:00 बजे सतरह भेदी पूजा, दोपहर 12:39 बजे विजय मुहुर्त में शिखर पर लाभार्थी परिवारों द्वारा मन्त्रोचारण के साथ ध्वजारोहण किया गया।

मूलनायक भगवान श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी की मुख्य ध्वजा भंवरलालजी विरधीचन्दजी छाजेड परिवार हरसाणी वालों की ओर से चढाई गई।

प्रवचन पाण्डाल में धर्मसभा का आयोजन हुआ जिसमें पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. की उपस्थिति में प्रवचन आदि के साथ चढ़ावों की बोलियां बोली गई।

ध्वजारोहण के बाद धर्मसभा का आयोजन हुआ एवं ध्वजा के लाभार्थी परिवारों द्वारा स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया। धर्मसभा व स्वामीवात्सल्य में अनुकरणीय सेवा देने वाले मण्डलों व संस्थाओं व स्वामीवात्सल्य के लाभार्थी परिवारों का ट्रस्ट मण्डल द्वारा बहुमान किया गया। वर्षगांठ के उपलक्ष में जिन मन्दिरों को रंगीन रोशनी व फूलों द्वारा सजाया गया। वर्षगांठ कार्यक्रम में आस-पास के क्षेत्रों सहित भारतभर से हजारों गुरुभक्तों शिरकत की।

एक दिवसीय महोत्सव के दिन बाडमेर नगर परिषद सभापति लूणकरण बोथरा, जिला शिक्षा अधिकारी कन्हैयालाल डेडवा, पूर्व नगर परिषद सभापति उषा जैन, कुशल वाटिका अध्यक्ष भंवरलाल छाजेड़, उपाध्यक्ष द्वारकादास डोसी, मंत्री सम्पतराज बोथरा दिल्ली, कोषाध्यक्ष बाबूलाल टी. बोथरा, प्रचारमंत्री केवलचन्द छाजेड़, ट्रस्टी शंकरलाल बोथरा, राणामल संखलेचा देवडाघ, भंवरलाल सेठिया, उदयराज गांधी, रतनलाल वडेरा, बाबुलाल छाजेड़ नवसारी, सज्जनराज मेहता, जगदीशचन्द भंसाली, चम्पालाल छाजेड़, जगदीशचन्द बोथरा, रमेश सर्राफ, कैलाश धारीवाल, गौतमचन्द वडेरा, बाबूलाल सेठिया, खेतमल बोथरा, जैन श्रीसंघ चौहटन के अध्यक्ष हिरालाल धारीवाल, शान्तिनाथ जैन श्री संघ धोरीमना अध्यक्ष बाबूलाल लालण, मण्डी व्यापार संघ अध्यक्ष वीरचन्द वडेरा, जैन भोजनशाला अध्यक्ष सोहनलाल बोथरा, अचलगच्छ जैन श्रीसंघ अध्यक्ष सम्पतराज वडेरा, सिणधरी संघ से लालचन्द मण्डोवरा, जसराज छाजेड़, अहमदाबाद से भेरुलाल लूणिया सहित कुशल वाटिका ट्रस्ट के पदाधिकारियों व जिले भर के सैंकड़ों गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया।

ब्यावर जिनालय की प्रतिष्ठा संपन्न

ब्यावर 20 जनवरी। गणाधीश पंन्यास विनयकुशलमुनिजी म. गणिवर्य आदि ठाणा, पू. साध्वी मनोहरश्रीजी म. की सुशिष्या पू. निरांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. तिलकश्रीजी म. की सुशिष्या पू. हर्षयशाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं पू. विजयेन्द्रश्रीजी म. की सुशिष्या पू. गुणरंजनाश्रीजी म., पू. सुरंजनाश्रीजी म. की सुशिष्या पू. मुक्तांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा और पू. कुशलश्रीजी म. की शिष्या पू. विरतीयशाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में यह महोत्सव संपन्न हुआ।

प्रतिष्ठा से संबंधित चढावो का अयोजन हुआ जिसमें उपस्थित श्रावक श्राविकाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। उसके 19 जनवरी 2019 को प्रातः शुभ मुहुर्त में संभवनाथ प्रभु एवं जिनबिंब व गुरुदेव गादीनशीन हुए, शिखर पर स्वर्णकलश और ध्वजारोहण हुआ और ब्यावर खरतरगच्छ संघ का सपना पूर्ण हुआ।

शिविर में रोगी लाभान्वित

ब्यावर 24 फरवरी। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद शाखा ब्यावर एवं श्रीराम हॉस्पीटल जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में संघवी कल्याणमलजी कांकरिया की पुण्य स्मृति में श्री पदमचंदजी मनीषकुमारजी मुकेशकुमारजी कांकरिया के सौजन्य से विशाल निशुल्क जांच एवं परामर्श शिविर सफलतापूर्वक हुआ। इस शिविर में डॉ. दिवाकर बंसल, डॉ. बलबीर चौधरी, डॉ. औमप्रकाश, डॉ. अमित भण्डारी ने विभिन्न रोगों के लगभग 800 मरिजों की जांच की।

शिविर का विस्तृत रूप से प्रचार-प्रसार किया गया था जिससे काकी अच्छी संख्या में लोग लाभान्वित हुए।

शिविर में केयुप ब्यावर के संरक्षक निहालचन्द कांकरिया, रिखबचन्द खटोड, राजेश जैन, दीपचंद कोठारी, सदस्य राजेन्द्र लोढा, यशवन्त रांका, अनिल डाकलीया, ललित कांकरिया, पदम भंसाली, विकास खटोड, मुकेश चोपडा, ज्ञान बुरड, कमल बरडिया, मनीष बरडिया आदि ने सेवायें प्रदान की। अध्यक्ष हुकमीचन्द भंसाली, सचीव सुरेन्द्र कोठारी ने श्री पदमचन्दजी कांकरिया परिवार को शिविर में सहयोग हेतु धन्यवाद दिया।

निमगुल में प्रतिष्ठा 3 मई को

दोंडाइचा-सारंगखेडा के मध्य नीमगुल गाँव के समीप में बने अभिनव जिनमंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की पावन निश्रा में ता. 3 मई 2019 को संपन्न होगी।

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से इस जिनमंदिर का निर्माण हुआ है। भूमिप्रदान दोंडाइचा निवासी श्री रतनलालजी कोठारी ने किया है। जिन मंदिर, दादावाडी एवं श्री विजयशान्ति गुरु मंदिर के निर्माण में उनका बडा योगदान है। शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी बाबुमलजी हरण का मार्गदर्शन इस मंदिर को प्राप्त हुआ है।

ट्रस्ट मंडल की विनंती को स्वीकार कर पूज्यश्री ने 3 मई का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया है।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री द्वारा घोषित चातुर्मास (वि.सं. 2076)

0 पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. आदि ठाणा	धुलिया-महाराष्ट्र
0 पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी मनीषप्रभसागरजी मोक्षप्रभसागरजी म.	सांचोर
0 पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	बीकानेर
0 पूजनीया गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा	गिरनार तीर्थ
0 पूजनीया गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	फलोदी
0 पूजनीया साध्वी श्री राजेशश्रीजी म. आदि ठाणा	कवर्धा
0 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	धुलिया
0 पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा	राजनांदगांव
0 पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा	अहमदाबाद
0 पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा	मोकलसर
0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा	तेजपुर आसाम
0 पूजनीया साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा	पाली
0 पूजनीया साध्वी श्री विनीतयशाश्रीजी म. अर्हंनिधिश्रीजी म. आदि ठाणा	धोरीमन्ना
0 पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा	जयपुर (मोतीडूंगरी)
0 पूजनीया साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	चेन्नई (धर्मनाथ मंदिर)
0 पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	बडौदा
0 पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	बैंगलोर
0 पूजनीया साध्वी श्री संयमज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा	जयपुर (मालवीय नगर)
0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा	चोहटन

शेष चातुर्मास यथानुकूलता घोषित किये जायेंगे।

सादर श्रद्धांजलि

श्री शंकरलालजी गोलेच्छा

बाड़मेर 27 फरवरी। बाड़मेर निवासी श्री शंकरलालजी गोलेछा का दिनांक 27 फरवरी को समाधिपूर्वक स्वर्गवास हुआ। आप जिनकांतिसागरसूरि आराधना भवन स्थित जिनमंदिर में पूजा करने गए थे। वहीं चौविहार उपवास के भावों के साथ आपकी समाधिमृत्यु हुई।

आपने जिनशासन में अपनी भतीजी कुमारी धर्मिष्ठा जो साध्वी धर्मनिधिश्रीजी म. के नाम से चारित्र-पालन कर रही है, एवं पुत्री केशर जो साध्वी कल्याणमालाश्रीजी म. को दीक्षा की स्वीकृति दी थी। आप सुश्रावक थे। अनेक प्रत्याख्यान को धारण किए हुए थे। प्रतिदिन दोनों समय प्रतिक्रमण, 20 पक्की माला, विविध तप इत्यादि धर्म में हमेशा अग्रसर रहते थे। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री शुभम जैन

जयपुर 27 जनवरी। श्री शुभम जैन पुत्र श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन (गुड मॉर्निंग इण्डिया) ने सद्गति की ओर प्रयाण कर दिया। जीवन की अंतिम सांस नवकार मंत्र, भक्तामर स्तोत्र, छोटी-बड़ी शांति, गुरु इकतीसा, गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म., पू. गणी श्री मणिरत्नसागरजी म., साध्वी गुणरंजनाश्रीजी, आदि से मांगलिक मांगलिक श्रवण कर 18 पाप स्थानक, समस्त जीवों से क्षमायाचना करते हुए संसार से अलविदा कह गया। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य उपाध्याय प्रवर **श्री मनोज्ञसागरजी म.** ठाणा 3 सूरत प्रतिष्ठा के पश्चात् नवसारी की स्पर्शना कर पुनः सूरत पधारे हैं। उनकी पावन निश्रा में फाल्गुन वदि अमावस्या को दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी की पुण्यतिथि सूरत पाल में मनाई जायेगी। वहाँ से पूज्यश्री पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूज्य मुनि श्री **मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म.** उज्जैन बिराज रहे हैं। होलिका चातुर्मास पश्चात् विहार कर पालीताना पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में दीक्षा समारोह संपन्न होगा।

पूज्य मुनि **श्री मनितप्रभसागरजी म.**, पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. बाडमेर से विहार कर चौहटन पधारे हैं। वहाँ कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् बाछडाउ पधारेंगे। पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. बाडमेर बिराज रहे हैं। मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. की परीक्षा पूर्ण होने के पश्चात् बाछडाउ पधारेंगे। वहाँ से चारों मुनि भगवंत नंदुरबार की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया महत्तरा **श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा 4 उज्जैन में बिराजमान है। कुछ दिनों पूर्व उनकी शल्य चिकित्सा हुई थी। वे अभी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

पूजनीया प्रवर्तिनी **श्री शशिप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा की पावन निश्रा में आगरा दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। वहाँ से विहार कर जयपुर पधार रहे हैं।

पूजनीया गणिनी प्रवरा **श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म.** आदि ठाणा उज्जैन नगर में बिराज रहे हैं। वहाँ से ता. 2 मार्च को पालीताना की ओर विहार किया है। वहाँ आपकी निश्रा में पू. साध्वी श्री प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म.सा. के वर्षीतप का पारणा संपन्न होगा।

पूजनीया गणिनी प्रवरा **श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा उज्जैन नगर में बिराज रहे हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् नंदुरबार की ओर विहार करेंगे।

पू. माताजी म. **श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा उज्जैन नगर में बिराज रहे हैं। पू. नूतन दीक्षिता साध्वी आगमरुचिश्रीजी म. की ता. 10 मार्च को बडी दीक्षा संपन्न होगी। तत्पश्चात् आसपास तीर्थ क्षेत्रों की यात्रा करेंगे। वहाँ से फिर नंदुरबार की ओर विहार होगा।

पू. साध्वी **श्री विमलप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा उज्जैन नगर में बिराज रहे हैं। यहाँ से मक्षी, नागेश्वर, अष्टापद, भोपावर, अमीझरा, मोहनखेडा आदि तीर्थों की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री कल्पलताश्रीजी म.** आदि ठाणा उज्जैन नगर में बिराज रहे हैं। यहाँ से महिदपुर, नागेश्वर आदि क्षेत्रों की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री विश्वरत्नाश्रीजी म.** आदि ठाणा ने पालीताना से गिरनार तीर्थ की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी **श्री संघमित्राश्रीजी म.** आदि ठाणा उज्जैन नगर में बिराज रहे हैं। यहाँ से वे जयपुर की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री शुद्धांजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा ने ईरोडस ेत ेनपट्टक िअ ेरि वहारि कयाह ै।व हां वर्षगांठ के बाद तिरपातुर की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री अभ्युदया श्रीजी म.** आदि ठाणा ने उज्जैन से इन्दौर की ओर विहार करेंगे।

सादर श्रद्धांजलि

रायपुर 16 फरवरी। छत्तीसगढ़ जैन समाज की आधार स्तंभ मदना बाई जसराजजी बरडिया जिन्होंने अंतिम समय तक धर्म, समाज की सेवा करने का मानवीय दायित्व को पूरा किया। 16 फरवरी 2019 को वे मानव काया को छोड़ स्वर्गवासी हो गई। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई। उन्होंने कैवल्यधाम तीर्थ, कुम्हारी, जिला-दुर्ग को साकार करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। इस पुण्यधाम की भूमिपूजन से लेकर भगवान आदिनाथ प्रभु की मूर्ति स्थापना एवं ध्वजारोहण तक के संपूर्ण कार्य में अपने पति सेठ जसराजजी बरडिया का कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया। धार्मिक सामाजिक एवं चिकित्सा के अनेक कार्यो में उन्होंने स्वयं तथा परिवार जनों को जोड़ा। उनके पुत्र त्रिलोकचंदजी बरडिया, शांतिलालजी बरडिया, अशोककुमारजी बरडिया को हर क्षण-हर घड़ी इन्हीं कार्यो के लिए बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित भी किया। श्रीमती मदनबाई जसराज बरडिया ने कुम्हारी स्थित विद्यापीठ की भूमिदान के अलावा जसराज सेवा सदन के निर्माण में भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया। रायपुर स्थित एम. एम. आई. हॉस्पिटल को मूर्त रूप देने एवं संचालित करने के लिए वे प्रेरणा स्रोत के रूप में जानी जाती है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री शांतिलालजी ललवाणी

इचलकरंजी 6 जनवरी। गढ़सिवाना निवासी संघवी श्री शांतिलालजी वरदीचंदजी ललवाणी का संथारा सहित समाधिमरण 6 जनवरी को इचलकरंजी में हुआ। 64 वर्षीय संघवी श्री शांतिलालजी हंसमुख, मृदुभाषी, मिलनसार, बुद्धिजीवी, व्यवहार-कुशल आदि गुणों से ओतप्रोत जिनशासन के समर्पित प्रहरी एवं दादा गुरुदेव के श्रद्धाशील भक्त थे।

अचानकअ ाईक ैंसरक ी० याधिक ोस मतापूर्वकस हनक रतेह ुएप्र तिदिनद ोनोंस मयस ामायिक,प्र तिक्रमण देवदर्शन, जिनपूजा, 14 नियमों के पच्चखान आदि प्रारंभ थे। अपने जीवन में अठाई, तेले, श्रावण-भाद्रपद माह में विविध एकांतर तप, ओली आदि की है। ऐसा प्रतीत होता था कि आपको अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था।

6 जनवरी सुबह से ही आपने सांसारिक परिग्रह का याद कर त्याग शुरु कर दिया था। साथ ही साथ अनेक व्यक्तियों को स्मृति में लेते हुए फोन द्वारा उनसे क्षमायाचना कर रहे थे। धर्मपत्नी सौ. श्यामादेवी के साथ सायंकालीन संक्षिप्त प्रतिक्रमण के बाद मात्र एक कमरा तथा पलंग आदि आवश्यक सामग्री के आगार सहित समस्त सांसारिक वस्तुओं का त्याग कर दिया था। स्वास्थ्य प्रतिक्षण गिर रहा था। मृत्यु सन्निकट है ऐसा अनुभव स्वयं कर रहे थे। अरिहंत नाम की धुन महाविदेह क्षेत्र में जन्म, सीमंधरस्वामी के पास दीक्षा और उनकी भक्ति आदि भावनाओं से ओतप्रोत थे ही, उसी समय जागृत अवस्था में प्रकट हुई संथारे की भावना को पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. से मांगलिक श्रवण, चार शरणा स्वीकार, दुष्कृत गर्हा आदि करते हुए हित शिक्षा के साथ भव-चरिम प्रत्याख्यान कर अपनी इच्छा पूर्ण की। पद्मावती आलोयणा व नवकार आदि का जाप करते-करते करीब 20 मिनट बाद आपने सद्गति की ओर प्रयाण कर दिया और अपनी मृत्यु को महोत्सव बनाया।

आपके समाधिमरण में आपकी धर्मपत्नी श्यामादेवी का अनमोल सहयोग रहा। साथ ही साथ आपकी दोनों पुत्र शैलेष एवं शंखेष भी आपकी समाधि में पूर्ण सहयोगी रहे। सोमवार दिनांक 7 जनवरी को आपकी वैकुंठी निकाली गई जिसमें समाज के सभी वर्गों के भाई-बहिनें सम्मिलित हुई।

दि. 11 जनवरी को श्रद्धांजलि सभा में अनेक संघों के गणमान्य व्यक्ति, मित्र गण, संबंधि जनों ने गुणानुवाद सह समाधिमरण की अनुमोदना की। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर अपने कॉलेज के दोस्त घटाशंकर से वार्तालाप कर रहा था। काफी समय बाद मिलना हुआ था। परस्पर एक दूसरे के हालचाल पूछ रहे थे।

घटाशंकर ने पूछा- क्या कर रहे हो! शादी के बाद घर के क्या हालचाल है!

जटाशंकर ने बताया- घर बहुत ही व्यवस्थित चल रहा है। तुम्हें तो पता है- मैं पूर्ण रूप से लोकतंत्र में विश्वास करता हूँ। घर की व्यवस्था भी मैंने पूर्ण रूप से लोकतंत्र के मुताबिक बना दी है।

घटाशंकर अचरज से भर कर बोला- कैसे! मैं कुछ समझा नहीं।

जटाशंकर ने कहा- देख! लोकतंत्र का अर्थ तो तुम्हें पता ही है न! लोकतंत्र का अर्थ है- परिवार में सभी को अलग-अलग दायित्व देना! मैंने भी ऐसा ही किया है।

घटाशंकर का अचरज शांत नहीं हुआ। उसने प्रश्नवाचक निगाहों से जटाशंकर को देखा।

जटाशंकर मुस्कुराते हुए बोला- मैंने वित्त विभाग पत्नी को दे दिया है। अपनी सासु को युद्ध प्रभार दिया है। अपने ससुर को मैंने गृह मंत्रालय सौंप दिया है। अपनी पत्नी की बहिन अर्थात् सालीजी को सूचना प्रसारण मंत्रालय दिया है। साले को विदेश प्रभार सौंपा गया है।

घटाशंकर बोला- अच्छा! जोरदार कार्य-विभाजन किया है। सबको अलग-अलग विभाग दे दिये हैं। और तूं तो प्रधानमंत्री है ना!

जटाशंकर धीरे से बोला- ना भाई ना! मैं न तो प्रधानमंत्री हूँ... ना राष्ट्रपति हूँ... बल्कि मैं तो आम जनता हूँ। वे सब मुझ पर ही तो राज कर रहे हैं।

घटाशंकर लोकतंत्र के इस विवरण को सुनकर मुस्कुरा उठा।

संसार की ऐसी दशा का चित्रण श्रवण कर भी अन्तर में वैराग्य भाव प्रकट नहीं होता... संसार की असारता का बोध नहीं होता...! इससे बड़ा आश्चर्य क्या हो सकता है!

जहाज मन्दिर में वर्षगांठ मनाई

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक जहाज मंदिर प्रतिष्ठा की 20वीं वर्षगांठ अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ 18 फरवरी 2019 माघ सुदि 14 को मनाई गई। कायमी ध्वजा के लाभार्थी श्री पारसमलजी अंकितकुमारजी छाजेड परिवार की ओर से श्री शांतिनाथ परमात्मा के मुख्य शिखर पर की मुख्य ध्वजा चढाई गई। इसी प्रकार दादावाडी, गुरुमंदिर, मणिधारी मंदिर, सर्वगच्छ मंदिर आदि की ध्वजाऐं चढाई गई।

इस पावन अवसर पर श्री सूरजमलजी धोका, खाण्डप एवं धर्मेन्द्रजी पटवा की विशेष उपस्थिति रही। इस अवसर पर अनेक यात्रिकों का आवागमन रहा।

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

को

जन्म दिवस पर
हार्दिक अभिनंदन...
वर्धापना...

Sanjay Surana
94242-02222

Ashok Surana
98935-94700

SURANA STORES

Deals in Sports and Musical Items

MFG. : VANDANA CARROM BOARD

Near Dadabadi, M.G. Road, Raipur 492 001 (G.C.)
Ph. : 0771-2537824 (Shop) Email : suranastores.raipur@gmail.com

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

को जन्म दिवस पर हार्दिक अभिनंदन...वर्धापना...

शा. मदनलाल विजयकुमार दीपककुमार

हिमांक ध्वज छाजेड़ परिवार

श्री छाजेड़ एजेंसीज

35 दादावाड़ी कंपाउंड, पो. नंदुरबार-425412 (महा.)

अवन्ति तीर्थ प्रतिष्ठा में अपार जनसमूह

अवन्ति तीर्थ ध्वजारोहण का अपूर्व दृश्य

श्री अवन्ति तीर्थ मुख्य रंगमंडप में पूजन का दृश्य

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

को
जन्म दिवस पर
हार्दिक अभिनंदन...
वर्धापना...

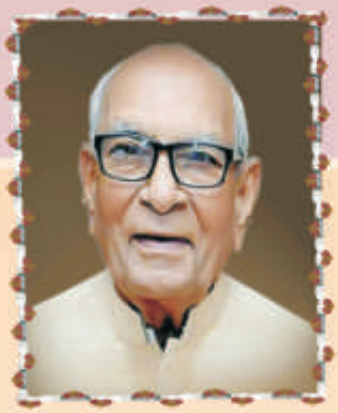

ओटोमोबाईल एवं ट्रैक्टर पार्ट्स के होलसेल एवं रिटेल विक्रेता

झाबक बाड़ा, कमासी पारा, तात्यापारा चौक के पास
रायपुर (छ.ग.) 492001

विनीत

मोतीलाल, गौतमचन्द, सम्पत लाल, कमलेश कुमार
संदीप, संजोग, संकेत एवं समस्त झाबक परिवार

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, त्रिवेणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408